भारत के सुदृढ़ भविष्य के लिए

MIDHANI

संकल्प

मिधानि की छमाही राजभाषा गृह पत्रिका

वर्ष 17, अंक 32, अक्टूबर 2025 - मार्च 2026
ई-पत्रिका अंक 12

राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' के 150 वर्ष पूरे होने के अवसर पर 7 नवंबर 2025 को मिधानि में वंदे मातरम् का सामूहिक गायन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में माननीय प्रधानमंत्री के संबोधन को उद्यम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एस.वी.एस. नारायण मूर्ति, निदेशक (वित्त) श्रीमती के. मधुबाला और निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) श्री पी. बाबू तथा मिधानि के कर्मचारियों ने ऑन लाइन सुना। यह समारोह एकता, देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव की अभिव्यक्ति का माध्यम बना।

डॉ. एसवीएस नारायण मूर्ति, सीएमडी मिधानि को 'कर्नल नागेंद्र राव स्मारक पुरस्कार'

डॉ. एसवीएस नारायण मूर्ति, सीएमडी मिधानि पुरस्कार ग्रहण करते हुए

किन्नरा आर्ट थिएटर्स और किन्नरा सांस्कृतिक एवं शैक्षिक ट्रस्ट द्वारा दि. 20.03.2026 को आयोजित 'उगादी पुरस्कार' समारोह के अवसर डॉ. एसवीएस नारायण मूर्ति, सीएमडी मिधानि को विज्ञान और प्रौद्योगिकी (रक्षा क्षेत्र) के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए, भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश एन.वी. रमणा द्वारा प्रतिष्ठित 'कर्नल नागेंद्र राव स्मारक पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान के.वी. रमणा (सेवानिवृत्त आईएएस और किन्नरा आर्ट थिएटर्स के अध्यक्ष) की उपस्थिति में प्रदान किया गया।

ऊष्मा उपचार सुविधा को प्रतिष्ठित नैडकैप मान्यता प्राप्त

मिधानि की **ऊष्मा उपचार** (हीट ट्रीटमेंट) सुविधा को प्रतिष्ठित नैडकैप (NADCAP) मान्यता प्राप्त हुई। यह मान्यता गुणवत्ता, प्रक्रिया नियंत्रण और वैश्विक एयरोस्पेस उद्योग की आवश्यकताओं के अनुपालन के उच्चतम मानकों के प्रति मिधानि की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। नैडकैप मान्यता प्राप्त करने से विश्व-स्तरीय धातुकर्म प्रसंस्करण के साथ महत्वपूर्ण एयरोस्पेस और रक्षा कार्यक्रमों को सहयोग देने की मिधानि की क्षमता और भी सुदृढ़ हो जाती है।

इस उपलब्धि को हासिल करने में किए गए प्रयासों के लिए मिधानि प्रबंधन अपनी समर्पित टीम का, और उनके निरंतर विश्वास तथा सहयोग के लिए अपने मूल्यवान ग्राहकों का आभार व्यक्त करता है।

संकल्प

मिधानि की छहमाही राजभाषा गृह पत्रिका

संपादक मंडल

प्रधान संरक्षक
डॉ. एस.वी.एस. नारायण मूर्ति
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

के. मधुबाला
निदेशक (वित्त)

पी. बाबू
निदेशक (उत्पादन एवं विपणन)

हरि कृष्ण वी.
अपर महाप्रबंधक (प्रभारी, मानव संसाधन)

संपादन व डिजाइनिंग
डॉ बी बालाजी
प्रबंधक
हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार
तथा सदस्य-सचिव,
राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादन सहयोग
श्रीमती डी.वी. रत्न कुमारी
कनिष्ठ कार्यपालक (हिंदी अनुभाग)

श्री वासुदेव
सहायक (हिंदी अनुवादक)

डॉ. विकास आजाद
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

संपादक संकल्प
मिश्र धातु निगम लिमिटेड,
कंचनबाग, हैदराबाद-500058
ई-मेल : b.balaji@midhani-india.in
टेलीफोन : 040-24184325, 4298
(मो) 8500920391

पत्रिका केवल आंतरिक वितरण एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए निःशुल्क है। पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे संपादक मंडल या मिधानि प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

पृष्ठ संख्या

- संदेश 02
- संपादकीय 06
- राजभाषा 07
  - मिधानि में विश्व हिंदी दिवस 2026...
  - जब शब्द बन जाते हैं सेतु...
  - कार्यालय में राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन...
  - हिंदी : अन्य भारतीय भाषाओं की सखी...
- तकनीकी लेख 18
  - रणनीतिक प्रबंधन...
  - स्मार्ट विद्युत प्रणालियाँ...
- आवरण कथा 26
  - वंदे मारतम् के 150 वर्ष...
- कविता 29
  - मेरे मुल्क के भ्रष्ट मालिक
- साक्षात्कार 30
  - श्री अरूण कुमार शर्मा, महाप्रबंधक (विपणन)
- एकांकी 33
  - ईमानदार नींबू पानीवाला
- संस्मरण 36
  - मेरे लिए, सीए बनना सिर्फ एक डिग्री नहीं थी
- गतिविधियाँ 37
- सामान्य लेख 44
  - सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों में...
  - अपशिष्ट प्रबंधन...

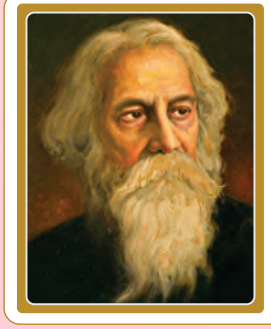

राममोहन ने बंग साहित्य को निमज्जन दशा से उन्नत किया, बंकिम ने उसके ऊपर प्रतिभा प्रवाहित करके स्तरबद्ध मूर्ति को अपसरित कर दिया। बंकिम के कारण ही आज बंगभाषा मात्र प्रौढ़ ही नहीं, उर्वरा और शस्यश्यामला भी हो सकी है।

— रबीन्द्रनाथ ठाकुर

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेश का संदेश

प्रिय साथियो,

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता और गर्व की अनुभूति हो रही है कि मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि), हैदराबाद की राजभाषा गृह पत्रिका 'संकल्प' के 32वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका मिधानि का एक अभिन्न अंग है, जो ज्ञान एवं रचनात्मकता को बढ़ावा देती है। 'संकल्प' न केवल हमारी संगठनात्मक गतिविधियों और उपलब्धियों का दर्पण है, बल्कि हमारे कर्मचारियों की साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रतिभाओं को उभारने का एक जीवंत माध्यम भी है।

मिधानि ने कर्मचारियों की सुरक्षा, तकनीकी प्रगति और उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाते हुए वित्त वर्ष 2025-26 में उत्पादन की नई ऊँचाइयों को छुआ है, जो मिधानि के इतिहास में अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। इसके पीछे हमारे परिश्रमी एवं कर्मठ कर्मचारियों का विशेष योगदान रहा है। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए मैं व्यक्तिश: प्रत्येक कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्यों को बधाई देता हूँ। धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ कि आपके सहयोग से ही यह उपलब्धि संभव हो पाई है।

जैसा कि मिधानि एक उत्पादन इकाई है इसके बावजूद कर्मचारियों ने राजभाषा से जुड़ी गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और राजभाषा हिंदी को संगठन में विशेष स्थान दिया। राजभाषा हिंदी हमारे प्रशासनिक गौरव और सांस्कृतिक विरासत का संगम है। तकनीकी लेख लिखने के लिए लेखकों का कार्य सराहनीय है। बच्चों के लिए सरल हिंदी में वैज्ञानिक-तकनीकी सामग्री उपलब्ध की जानी चाहिए। इससे हिंदी का प्रचार-प्रसार प्रभावशाली हो सकेगा।

मैं पत्रिका के संपादन मंडल, रचनाकार एवं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके अथक प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी आप सभी अपना महत्वपूर्ण सहयोग एवं प्रयास जारी रखेंगे और बौद्धिक तथा कलात्मक रचनाओं से सुसज्जित 'संकल्प' के प्रकाशन की निरंतरता इसी प्रकार बनी रहेगी।

शुभकामनाओं सहित... जय हिंद!

नारायण मूर्ति

डॉ. एस.वी.एस. नारायण मूर्ति
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक (वित्त) का संदेश

प्रिय साथियो,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि संकल्प का नवीनतम अंक प्रकाशित हो रहा है और मुझे गर्व है अपने कार्मिकों पर जिनके सहयोग से मिधानि ने वित्त वर्ष 2025-26 में बिक्री/उत्पादन के पिछले रिकॉर्ड को पार किया है। सभी कर्मचारियों को मैं हृदय से बधाई देती हूँ। मुझे उम्मीद है कि आने वाले वर्षों में हमारे कर्मठ एवं परिश्रमी कार्मिक मिधानि को अंतरिक्ष की ऊँचाइयों तक ले जाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

यह युग डिजिटल एवं तकनीक का युग है, वर्तमान में तीव्र गति से बदलाव हो रहे हैं। यहाँ प्रतिदिन नए-नए व्यावसायिक मॉडल उभर कर सामने आ रहे हैं और मौजूदा व्यवसाय को बाधित भी कर रहे हैं। हमें अपने अस्तित्व को बनाए रखने और समृद्धि को बरकरार रखने के लिए उन्नत व्यावसायिक मॉडल एवं प्रक्रियाओं को निरंतर अपनाते हुए नवोन्मेष के साथ आगे बढ़ते रहना है। हमारी कारोबार प्रक्रिया मिधानि के लिए सफलता की कुंजी है। हमारी गतिशीलता धातुकर्मीय क्षेत्र को दक्षता और स्थिरता की ओर ले जाती है। इस कार्य में भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। मिधानि में स्थानीय भाषा के साथ-साथ आम बोलचाल में हिंदी का प्रयोग भी सहजता से होता है।

मिधानि में कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। हमें इसके प्रतिशत में वृद्धि करने का प्रण करना चाहिए। यदि हम अपनी भाषाओं में कार्य करेंगे तो उन्नति का पथ और अधिक मजबूत होगा।

अंत में, सभी बदलाव प्रक्रियाएँ तभी सफल होती हैं, जब हमारे कार्मिकों के पास त्वरित स्वीकार्य क्षमता और सुलभ सुपुर्दगी हो, जिसका प्रदर्शन कार्मिकों ने वित्त वर्ष 2025-26 में किया भी है।

'संकल्प' के लेखकों एवं संपादन टीम को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

के मधुबाला

के. मधुबाला
निदेशक (वित्त)

निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) का संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक खुशी है कि मिधानि अपनी गृह-पत्रिका 'संकल्प' का 32वां अंक प्रकाशित कर रहा है। राजभाषा का कार्यान्वयन हम सभी का दायित्व है तथा गृह-पत्रिका का प्रकाशन भी उन्हीं दायित्वों में से एक है। राजभाषा के प्रचार प्रसार के लिए मिधानि में प्रति माह एक प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है, जिससे कार्मिकों में राजभाषा हिंदी के प्रति नई ऊर्जा का संचार होता है और जीवंतता बनी रहती है। इसका सकारात्मक असर उत्पादकता पर भी देखने को मिलता है।

वित्त वर्ष 2025-26 हम सब के लिए यादगार वर्ष रहा है। हम सब ने मिलकर मिधानि के इतिहास में रिकॉर्ड बिक्री को दर्ज किया है। इस सफलता के लिए मैं हर एक कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ और भविष्य की सफलताओं के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

मिधानि साल-दर-साल निरंतर विकसित हो रहा है। परिवर्तनों को आत्मसात करते हुए, प्रौद्योगिकी का लाभ उठाते हुए और बेहतर ग्राहक दृष्टिकोण से आज हम भारत के धातुकर्मीय क्षेत्र का एक ऐसा संगम बन गए हैं, जहाँ पारंपरिक अनुभव और नवाचार के साथ भविष्य निर्माण के लिए एक दृष्टिकोण का सहज रूप से मिलन हो रहा है।

जब देश नए आत्मविश्वास और युवा शक्ति के साथ आगे बढ़ रहा है, मिधानि द्वारा धातुकर्म विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने में अग्रपंक्ति में खड़ा है। एक मजबूत नींव पर निर्मित कार्यबल द्वारा संचालित मिधानि इस परिवर्तनकारी यात्रा में एक प्रमुख भागीदार बनने के लिए तैयार है। ऐसे में मिधानि की सफलता में राजभाषा कार्यान्वयन के साथ-साथ हिंदी विभाग कर्मचारियों में उत्साह बनाए रखने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करता है। इसी की एक कड़ी है राजभाषा गृह पत्रिका 'संकल्प' का प्रकाशन। यह पत्रिका कर्मचारियों की रचनात्मकता को उद्घाटित करने का एक सुलभ मंच है।

संकल्प के इस नवीनतम अंक में प्रकाशित लेखों और हिंदी विभाग के कार्मिकों को बधाई देता हूँ। आप सबने मिलकर इस अंक को पठनीय और आकर्षक बनाया है।

संकल्प की संपादक टीम को बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

पी बाबू
निदेशक (उत्पादन एवं विपणन)

अपर महाप्रबंधक (प्रभारी, मानव संसाधन) का संदेश

प्रिय कर्मचारीगण,

यह अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है कि मिधानि की गृह पत्रिका 'संकल्प' का अगला अंक हम सबके बीच आ रहा है। गृह पत्रिका 'संकल्प' कंपनी के सभी दृष्टिकोणों को साझा करने के लिए एक सशक्त मंच है। मुझे उम्मीद है कि यहाँ छपे लेख, कविता व अन्य प्रकाशित सामग्री आप सभी को प्रेरित करेगी और भविष्य में लिखने के लिए प्रोत्साहित भी करेगी। राजभाषा के प्रचार–प्रसार के लिए संकल्प पत्रिका एक अच्छा माध्यम है।

मिधानि ने वित्त वर्ष 2025-26 में अब तक का सर्वोच्च प्रदर्शन किया है। इस अद्भुत प्रदर्शन के लिए सभी करमचारियों को बहुत–बहुत बधाई। मिधानि के इस सर्वोच्च प्रदर्शन में मानव संसाधन विभाग की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

हमारा प्रबंधन सक्रिय रूप से कर्मचारियों के साथ संवाद बनाए रखता है, हर एक छोटी-छोटी सफलताओं का उत्सव मनाता है। ये छोटे किंतु प्रभावी कदम टीम स्पिरिट को बढ़ाने और कार्यस्थल पर सकारात्मक वातावरण बनाए रखने में सहायक होते हैं। इसी का एक हिस्सा राजभाषा पत्रिका 'संकल्प' है। इसके माध्यम से कार्मिक अपने लेखन कौशल का प्रदर्शन करते हैं और राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सहयोगी बनते हैं।

संकल्प की संपादकीय टीम को इस अद्भुत संक्लन के लिए हार्दिक बधाई।

हरिकृष्ण वी.
अपर महाप्रबंधक (प्रभारी - मानव संसाधन)

संपादकीय

संकल्प : भाषा, सहभागिता और संगठनात्मक एकता का प्रतीक

राजभाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान, प्रशासनिक सुदृढ़ता और राष्ट्रीय एकात्मता का सशक्त आधार है। मिधानि ने इस दिशा में निरंतर सराहनीय प्रयास करते हुए राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन को अपनी कार्यसंस्कृति का अभिन्न अंग बना लिया है।

कंपनी में राजभाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित करने हेतु समय-समय पर विभिन्न योजनाएँ, कार्यशालाएँ एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी प्रशिक्षण, कार्यशालाओं का आयोजन तथा दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने जैसे कदम यह दर्शाते हैं कि मिधानि केवल औपचारिकता तक सीमित न रहकर वास्तविक क्रियान्वयन पर बल देता है। मिधानि की राजभाषा गृह पत्रिका 'संकल्प' में हिंदी लेखों का प्रकाशन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है, जो तकनीकी क्षेत्र में भी हिंदी के विस्तार को सुनिश्चित करता है।

पिछले कुछ समय में मिधानि द्वारा आयोजित प्रमुख कार्यक्रमों ने न केवल संगठन की कार्यकुशलता को प्रदर्शित किया, बल्कि राष्ट्रीय महत्व के विषयों को भी प्रमुखता दी। विभिन्न औद्योगिक प्रदर्शनी, नवाचार से जुड़े आयोजन, तथा आंतरिक संवाद मंचों ने कर्मचारियों को अपने विचार साझा करने और संगठनात्मक विकास में योगदान देने का अवसर प्रदान किया है।

इस अंक की एक विशेष उपलब्धि 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूर्ण होने का उत्सव है। वंदे मातरम् केवल एक गीत नहीं, बल्कि भारत की स्वतंत्रता चेतना और राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। इस ऐतिहासिक अवसर का उत्सव मनाते हुए मिधानि ने देशभक्ति और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुन: अभिव्यक्त किया है। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम ने कर्मचारियों में राष्ट्रप्रेम और एकता की भावना को और सुदृढ़ किया है।

मुझे आशा है कि पत्रिका में प्रकाशित विविध लेख, कर्मचारियों के ज्ञानवर्धन के साथ-साथ कंपनी की प्रगति में सहयोग प्रदान करने हेतु उन्हें प्रेरित भी करेगी। प्रकाशित लेखों के माध्यम से न केवल कर्मचारियों की रचनात्मकता को मंच मिला है, बल्कि हिंदी में अभिव्यक्ति की क्षमता का भी विस्तार हुआ है। सभी लेखकों के प्रति आभार।

अंतत:, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मिधानि में राजभाषा का कार्यान्वयन एक सशक्त आंदोलन के रूप में विकसित हो रहा है, जो प्रशासनिक दक्षता के साथ-साथ सांस्कृतिक समृद्धि को भी बढ़ावा दे रहा है। हमें विश्वास है कि आने वाले समय में भी मिधानि द्वारा इसी उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा राष्ट्रीय मूल्यों के संवर्धन में अग्रणी भूमिका निभाई जाएगी। वित्त वर्ष 2025-26 में उत्पादन बिक्री में अभूतपूर्व उपलब्धि के लिए सभी कर्मचारियों को बहुत-बहुत बधाई।

डॉ. बी. बालाजी
प्रबंधक (हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार)

मिधानि में विश्व हिंदी दिवस 2026 : भाषा, संस्कृति और साहित्यिक चेतना का उत्सव

भारत बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक परंपराओं वाला देश है, जहाँ भाषाएँ केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं बल्कि संस्कृति, इतिहास और राष्ट्रीय चेतना की वाहक भी हैं। इन्हीं भाषाओं में हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसने न केवल भारत की विविधता को जोड़ने का कार्य किया है, बल्कि विश्व स्तर पर भी अपनी सशक्त पहचान बनाई है। हिंदी की इसी वैश्विक प्रतिष्ठा और सांस्कृतिक महत्ता को रेखांकित करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष **10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस** मनाया जाता है। इस अवसर पर देश-विदेश के विभिन्न संस्थानों में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और उसके उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए विविध कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

इसी कड़ी में **रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन प्रतिष्ठित सार्वजनिक उपक्रम मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि) में विश्व हिंदी दिवस 2026** का आयोजन अत्यंत उत्साह, गरिमा और सांस्कृतिक उल्लास के साथ किया गया। यह कार्यक्रम उद्यम की **राजभाषा कार्यान्वयन समिति (राभाकास)** के तत्वावधान में आयोजित हुआ, जिसने न केवल राजभाषा हिंदी के प्रति संगठन की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया बल्कि कर्मचारियों में साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना को भी सुदृढ़ किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता मिधानि के **अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एस. वी. एस. नारायण मूर्ति** ने की। इस अवसर पर उद्यम की **निदेशक (वित्त) श्रीमती के. मधुबाला** भी विशेष रूप से उपस्थित रहीं और अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इसके अतिरिक्त उद्यम के अनेक अधिकारी, कर्मचारी तथा हिंदी प्रेमी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का वातावरण उत्साह, आत्मीयता और साहित्यिक ऊर्जा से परिपूर्ण रहा।

हास्य-व्यंग्य कवि सम्मेलन बना मुख्य आकर्षण

समारोह का सबसे प्रमुख और आकर्षक भाग **हास्य-व्यंग्य कवि सम्मेलन रहा। इस सम्मेलन** में हिंदी के सुप्रसिद्ध कवियों - **डॉ. ऋषभदेव शर्मा, श्री वेणुगोपाल भट्टड** और **श्री वहीद क़ादरी पाशा** - ने अपनी रचनाओं का पाठ किया।

कवियों ने अपनी ओजस्वी, व्यंग्यपूर्ण और विचारोत्तेजक कविताओं के माध्यम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उनकी प्रस्तुतियों में समकालीन समाज की विसंगतियों पर तीखा लेकिन मनोरंजक व्यंग्य था, वहीं मानवीय संवेदनाओं और जीवन के विविध अनुभवों का भी सजीव चित्रण देखने को मिला। कवि सम्मेलन के दौरान सभागार में बार-बार ठहाके गूंजते रहे और श्रोताओं की तालियों की गड़गड़ाहट कार्यक्रम की सफलता का प्रमाण बन गई।

हास्य और व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत की गई इन रचनाओं ने न केवल श्रोताओं का मनोरंजन किया बल्कि उन्हें सोचने के लिए भी प्रेरित किया। इस प्रकार यह कवि सम्मेलन साहित्यिक आनंद और बौद्धिक संवाद का एक सुंदर संगम बन गया।

हिंदी : सांस्कृतिक चेतना की भाषा

कार्यक्रम के अध्यक्षीय संबोधन में **डॉ. एस. वी. एस. नारायण मूर्ति** ने हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि **भारत की सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रीय एकता की सशक्त अभिव्यक्ति** है। उन्होंने कहा कि

हिंदी ने देश की विविध भाषाओं और संस्कृतियों को जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि आज हिंदी का प्रभाव भारत की सीमाओं से आगे बढ़कर विश्व के अनेक देशों तक फैल चुका है। वैश्वीकरण और डिजिटल संचार के इस युग में हिंदी की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। उन्होंने मिधानि में राजभाषा हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख करते हुए कहा कि संस्थान में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक पहल की जा रही हैं।

डॉ. मूर्ति ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे अपने **दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें**। उनका मानना था कि जब प्रशासनिक और तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी का उपयोग बढ़ेगा, तभी राजभाषा के रूप में उसकी वास्तविक शक्ति और उपयोगिता सामने आएगी।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की बढ़ती भूमिका

कार्यक्रम के दौरान सुप्रसिद्ध विद्वान **डॉ. ऋषभदेव शर्मा** ने हिंदी की वैश्विक स्थिति पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि किसी भी भाषा की शक्ति केवल उसके बोलने वालों की संख्या से निर्धारित नहीं होती, बल्कि उसके **भौगोलिक विस्तार, सांस्कृतिक प्रभाव और अंतरराष्ट्रीय स्वीकार्यता** से भी मापी जाती है।

उन्होंने बताया कि आज हिंदी जानने-समझने वालों की संख्या **सौ करोड़ से अधिक** हो चुकी है और यह एशिया, अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका तथा ऑस्ट्रेलिया तक एक महत्वपूर्ण संपर्क भाषा के रूप में स्थापित हो रही है।

डॉ. शर्मा ने इस तथ्य पर भी प्रकाश डाला कि डिजिटल माध्यमों, फिल्मों, साहित्य और प्रवासी भारतीयों के योगदान से हिंदी का वैश्विक प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि आज सोशल मीडिया, इंटरनेट और नई तकनीकों के माध्यम से हिंदी तेजी से विश्व समुदाय तक पहुँच रही है। इस दृष्टि से हिंदी भविष्य में विश्व की प्रमुख भाषाओं में अग्रणी स्थान प्राप्त करने की क्षमता रखती है।

'संकल्प' गृह पत्रिका का विमोचन

समारोह के दौरान मिधानि की राजभाषा गृह पत्रिका '**संकल्प**' के **31वें अंक (ई-पत्रिका का 11वाँ अंक)** का विधिवत लोकार्पण किया गया। यह पत्रिका मिधानि में हिंदी भाषा के संवर्धन और कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण मंच है।

इस अवसर पर हिंदी मासिक प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी पुरस्कार प्रदान किए गए। पुरस्कार प्राप्त करने वाले कर्मचारियों की प्रसन्नता और उत्साह यह दर्शा रहे थे कि हिंदी गतिविधियाँ कर्मचारियों में साहित्यिक और रचनात्मक अभिरुचि को प्रोत्साहित कर रही हैं।

सांस्कृतिक गरिमा के साथ हुआ कार्यक्रम का संचालन

कार्यक्रम का शुभारंभ **दीप प्रज्वलन** और **मिधानि गीत** के साथ हुआ, जिसने वातावरण को गरिमामय और प्रेरणादायी बना दिया। पूरे समारोह का संचालन **डॉ. बी. बालाजी** ने अत्यंत प्रभावशाली और रोचक शैली में किया। उन्होंने अपनी सहज, विनोदी और सधी हुई प्रस्तुति से कार्यक्रम को जीवंत बनाए रखा।

स्वागत-सत्कार से लेकर गृह पत्रिका के लोकार्पण, काव्यपाठ और पुरस्कार वितरण तक कार्यक्रम के प्रत्येक चरण का संचालन अत्यंत कुशलता और संतुलन के साथ किया गया।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में हिंदी अनुभाग की **श्रीमती रत्नकुमारी (अवर कार्यपालक-हिंदी), डॉ. विकास आजाद (कनिष्ठ हिंदी अनुवादक)** तथा डाक अनुभाग के कर्मचारियों **प्रेम** और **जयपाल** का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनकी सक्रिय भागीदारी और समर्पण ने इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

समारोह का समापन राष्ट्रगीत **'वंदे मातरम्'** और धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसने पूरे आयोजन को राष्ट्रीय भावना और सांस्कृतिक गौरव के साथ पूर्णता प्रदान की।

हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता का सशक्त उदाहरण

इस प्रकार मिधानि में आयोजित विश्व हिंदी दिवस 2026 का यह समारोह केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं था, बल्कि **भाषा, साहित्य और सांस्कृतिक चेतना का जीवंत उत्सव** बनकर सामने आया। इस अवसर ने कर्मचारियों के बीच हिंदी के प्रति जागरूकता और अपनत्व की भावना को और अधिक मजबूत किया।

हास्य-व्यंग्य कवि सम्मेलन, विद्वानों के विचार, गृह पत्रिका का विमोचन और पुरस्कार वितरण जैसे विविध कार्यक्रमों ने इस आयोजन को बहुआयामी और यादगार बना दिया।

निस्संदेह, यह आयोजन मिधानि में **राजभाषा हिंदी के प्रति बढ़ती प्रतिबद्धता, साहित्यिक जागरूकता और सांस्कृतिक समृद्धि** का एक प्रेरक उदाहरण सिद्ध हुआ। हिंदी के माध्यम से राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक संवाद को सुदृढ़ करने की दिशा में इस प्रकार के आयोजन भविष्य में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे।

मिधानि राजभाषा गरिमा पुरस्कार की रोलिंग ट्रॉफी के साथ
वित्त विभाग के अपर महाप्रबंधक (प्रभारी, वित्त विभाग) श्री एपी राव तथा कर्मचारीगण

जब शब्द बन जाते हैं सेतु

(मिधानि की कार्यशालाओं ने कैसे हिंदी को दफ़्तर की ज़िंदगी का हिस्सा बनाया)

डॉ. विकास कुमार आज़ाद
कनिष्ठ हिंदी अनुवाद

एक साधारण-सी सुबह। कंप्यूटर स्क्रीन के सामने बैठे एक कर्मचारी की उँगलियाँ कीबोर्ड पर ठिठकी हुई हैं। मन में एक ही उलझन - जो बात हिंदी में सोची है, उसे टाइप कैसे करें? यह असमंजस न किसी एक कर्मचारी का है, न किसी एक दफ़्तर का। यह उस पीढ़ी की साझा दुविधा है जो हिंदी बोलती और सोचती तो है, पर कार्यालयीन कामकाज में उसे बरतने में हिचकिचाती है। मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि) ने इसी हिचकिचाहट को दूर करने का बीड़ा उठाया - न उपदेश से, न दबाव से, बल्कि सीखने और समझने के एक जीवंत वातावरण से।

नवम्बर 2025 से फरवरी 2026 के बीच मिधानि में हिंदी कार्यशालाओं की एक सुविचारित श्रृंखला चलाई गई। ये कार्यशालाएँ किसी खानापूर्ति की तरह नहीं थीं - हर बार विषय बदला, प्रतिभागी बदले, वक्ता बदले, और इसी के साथ बदलती रही उनकी प्रासंगिकता। इस यात्रा में कनिष्ठ सहायकों से लेकर उप महाप्रबंधक तक - सभी एक ही कक्षा के छात्र बने और हिंदी को एक नई दृष्टि से जाना।

'राजभाषा कार्यान्वयन तभी सफल होगा जब प्रत्येक कर्मचारी अपनी सक्रिय भूमिका निभाए।'

पहला पड़ाव : दायित्व की समझ

नवम्बर की उस सुबह, जब हैदराबाद की हवा में हल्की ठंडक थी, मिधानि के सभागार में एक अलग किस्म की पाठशाला सजी थी। विषय था - राजभाषा के प्रति कर्मचारियों का दायित्व। भारतीय स्टेट बैंक के मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री रजनीश कुमार यादव का व्याख्यान सुनते हुए श्रोताओं को शायद पहली बार यह एहसास हुआ कि जिस दस्तावेज़ पर वे हस्ताक्षर करते हैं, वह द्विभाषिक होना केवल नियम नहीं - एक संवैधानिक ज़िम्मेदारी है। संविधान के अनुच्छेद, राजभाषा अधिनियम 1963 और राजभाषा नियम 1976 - ये केवल कानूनी दस्तावेज़ नहीं, बल्कि भाषायी लोकतंत्र की बुनियाद हैं। यह बात जब एक व्यावहारिक, सहज शैली में कही गई, तो श्रोताओं के चेहरों पर जागरूकता की एक नई रोशनी दिखी।

उसी कार्यशाला के दूसरे सत्र में माहौल और भी रोचक हो गया। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक (से.नि.) मु. कमालुद्दीन ने 'प्रशासनिक शब्दावली' को एक सूखे विषय की तरह नहीं, बल्कि भाषा की जीवंत दुनिया के रूप में प्रस्तुत किया। शब्दों के पीछे छिपी व्युत्पत्ति, उनके प्रयोग के संदर्भ और अर्थ की बारीकियाँ - यह सब सुनकर लगा मानो हिंदी कोई बोझ नहीं, एक विरासत है जिसे सहेजना और बरतना दोनों जरूरी हैं।

नेतृत्व की कक्षा : जब डीजीएम भी बने शिक्षार्थी

दिसम्बर की कार्यशाला इस दृष्टि से विशेष थी कि इसके प्रतिभागी उद्यम के उप महाप्रबंधक थे। अक्सर यह माना जाता है कि राजभाषा प्रशिक्षण केवल निचले स्तर के कर्मचारियों के लिए होता है। मिधानि ने इस धारणा को तोड़ा। जब वरिष्ठ अधिकारी स्वयं कक्षा में बैठकर सीखते हैं, तो पूरी संस्था को एक संदेश जाता है - हिंदी किसी एक पद की नहीं, पूरे संगठन की भाषा है।

आरसीआई-डीआरडीओ के सहायक निदेशक (राजभाषा) डॉ. काज़िम अहमद ने संवैधानिक प्रावधानों की व्याख्या की, पर उनका स्वर आदेशात्मक नहीं था - वे प्रतिभागियों से संवाद कर रहे थे, उन्हें हिंदी की संभावनाओं का साझीदार बना रहे थे। केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी के विस्तार की राह में जो व्यावहारिक बाधाएँ आती हैं, उन पर खुली चर्चा हुई और समाधान के सूत्र खोजे गए।

लेकिन उस कार्यशाला की सबसे अविस्मरणीय स्मृति है दूसरा सत्र। दक्षिण मध्य रेलवे के अनुवाद अधिकारी श्री शिरीष अवस्थी ने जब रामचरितमानस की चौपाई - 'पृथ्वी, जल, पावक, गगन, समीरा; पंच तत्त्व तें बनै शरीरा' - से अपना व्याख्यान शुरू किया, तो शायद किसी को अंदाज़ा नहीं था कि बात हिंदी कार्यशाला में एक्युप्रेशर तक पहुँचेगी। पंचतत्त्व और मानव शरीर की संरचना की यह वैज्ञानिक व्याख्या, और फिर सिरदर्द, तनाव व गर्दन दर्द के लिए व्यावहारिक एक्युप्रेशर बिंदुओं का प्रदर्शन - सभागार में उत्साह और जिज्ञासा की एक अनूठी लहर दौड़ गई। प्रश्नों की झड़ी लग गई और सत्र एक जीवंत संवाद में बदल गया। यह सत्र याद दिलाता है कि हिंदी केवल

भाषा नहीं - वह ज्ञान की, संस्कृति की और जीवन की वाहिका है।

'हिंदी को कभी किसी पर थोपा नहीं गया - राजभाषा विभाग सदैव प्रेरणा और प्रोत्साहन से हिंदी का प्रसार करता आया है।'

उँगलियों को मिली नई भाषा : हिंदी टंकण

जनवरी की कड़कड़ाती सुबह जब कर्मचारी हिंदी टंकण की कार्यशाला में पहुँचे, तो मन में एक आशंका थी - क्या हिंदी में टाइप करना सच में इतना कठिन है? और जब डॉ. विकास कुमार आज़ाद ने लिप्यंतरण की ध्वन्यात्मक विधि समझाई - यानी जैसे बोलो, वैसे लिखो - तो वह आशंका धीरे-धीरे विश्वास में बदलने लगी। 'namaskar' टाइप करते ही स्क्रीन पर 'नमस्कार' उभरा - यह छोटा-सा क्षण कई कर्मचारियों के लिए एक बड़ा मोड़ था।

डॉ. बी. बालाजी ने उद्घाटन में जो बात कही वह मर्म की थी - केंद्र सरकार केवल हिंदी में काम करने का निर्देश नहीं देती, बल्कि प्रोत्साहन योजनाओं के माध्यम से इस कार्य को पुरस्कृत भी करती है। हिंदी टंकण और आशुलिपि का प्रशिक्षण उस दिशा में एक ठोस कदम है जो कर्मचारियों को राजभाषा के साथ सहज और आत्मविश्वासी बनाता है।

फरवरी : एक नई पीढ़ी की शुरुआत

फरवरी में मिधानि के उत्कृष्टता केन्द्र में सहायक श्रेणी के कर्मचारियों के लिए आयोजित कार्यशाला उस पूरी श्रृंखला की एक तार्किक परिणति थी। ये वे कर्मचारी हैं जिनके हाथों से रोज़ाना दर्जनों दस्तावेज़ गुजरते हैं - पत्र, अनुस्मारक, रिपोर्ट। यदि ये कर्मचारी हिंदी में काम करने में सहज हो जाएँ, तो राजभाषा कार्यान्वयन की नींव स्वत: मज़बूत हो जाती है।

कार्यशाला में यह बात रेखांकित की गई कि लिप्यंतरण पद्धति से हिंदी टंकण न केवल आसान है, बल्कि इसमें अतिरिक्त कीबोर्ड सीखने की भी ज़रूरत नहीं। तकनीक जब भाषा की सेवा में आती है, तो रास्ते खुलते हैं। प्रतिभागियों ने जब अभ्यास के बाद अपनी प्रतिक्रिया साझा की, तो उनके शब्दों में जो उत्साह था वह किसी पाठ्यक्रम की उपलब्धि से नहीं, बल्कि एक नई क्षमता के जागने से था।

धागा जो सबको बांधता है

इन चारों कार्यशालाओं में एक बात साझा थी - समापन। हर बार जब प्रतिभागी हिंदी में काम करने की शपथ लेते थे, तो वह केवल एक रस्म नहीं थी। वह एक संकल्प था, एक सार्वजनिक वचन, जो उन्हें भाषा के साथ एक नई जिम्मेदारी में बाँधता था। और यह शपथ उन्हें किसी ने जबरन नहीं दिलाई - वे स्वयं आगे आए, क्योंकि कार्यशाला ने उनके भीतर कुछ जगाया था।

इन सफल आयोजनों के पर्दे के पीछे की शक्ति थी हिंदी अनुभाग की वह टीम जो हर बार बिना थके, बिना शोर किए, व्यवस्था को सँभालती रही - श्रीमती डी.वी. रत्नाकुमारी, श्री विकास कुमार आज़ाद और डाक अनुभाग के श्री जयपाल। किसी भी सफल कार्यक्रम की असली जान उसके आयोजन में होती है, और यह टीम उसकी जीती-जागती मिसाल है।

मिधानि की यह पहल बताती है कि राजभाषा कार्यान्वयन कोई बाहरी दबाव नहीं, बल्कि एक आंतरिक प्रेरणा बन सकती है - बशर्ते कि माहौल बनाया जाए, अवसर दिए जाएँ और भाषा को उसकी पूरी जीवंतता में प्रस्तुत किया जाए। जब एक कर्मचारी पहली बार हिंदी में एक पत्र टाइप करता है, जब एक वरिष्ठ अधिकारी एक्युप्रेशर के साथ-साथ राजभाषा की ज़रूरत समझता है - तब शब्द सच में सेतु बन जाते हैं।

'भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं - वह किसी संस्था की आत्मा की आवाज़ है।'

मिधानि में जो हिंदी कार्यशालाओं की यह श्रृंखला हुई, वह केवल एक प्रशासनिक अनुपालन नहीं थी। यह उस विश्वास की अभिव्यक्ति थी कि हिंदी को अपनाना न कोई त्याग है, न कोई समझौता - यह तो अपनी जड़ों को पहचानने का एक सहज और गर्वपूर्ण मार्ग है।

कार्यालय में राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन : '12 प्र' की रणनीति और व्यवहारिक आयाम

ईश्वर प्रसाद
प्रबंधक (डब्ल्यू पी एम)

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।'

हिंदी साहित्य के युगप्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र की उपर्युक्त पंक्तियाँ भाषा और उन्नति के अटूट संबंध को स्पष्ट करती हैं। इसी विचारधारा को आधार बनाकर संविधान सभा ने व्यापक विमर्श के पश्चात हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। 14 सितंबर 1949 को हिंदी तथा देवनागरी लिपि को संवैधानिक मान्यता प्रदान की गई। यह निर्णय केवल प्रशासनिक सुविधा का विषय नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक एकता, राष्ट्रीय पहचान और जन-संपर्क की दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण था।

'राजभाषा' का अर्थ है-राजकाज की भाषा, अर्थात् वह भाषा जिसमें सरकारी कार्य संपन्न किए जाएँ। स्वतंत्रता के समय हिंदी देश के विभिन्न भागों में संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित थी। तीर्थ-परंपरा, व्यापारिक आवागमन और जन-आंदोलनों ने हिंदी को एक साझा अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। यद्यपि संक्रमण काल के रूप में अंग्रेज़ी को भी सीमित अवधि तक सहायक भाषा के रूप में बनाए रखने का प्रावधान किया गया, परंतु उद्देश्य स्पष्ट था-प्रशासनिक कार्यों में हिंदी का क्रमिक और प्रभावी विस्तार।

वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना इसी उद्देश्य से की गई कि हिंदी को मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों तथा अन्य सरकारी कार्यालयों में कार्य-भाषा के रूप में सुदृढ़ किया जा सके। समय के साथ यह अनुभव किया गया कि केवल नियम बनाना पर्याप्त नहीं है; भाषा का वास्तविक विकास व्यवहार, प्रशिक्षण, प्रेरणा और प्रबंधन से होता है। इसी दृष्टि से राजभाषा विभाग ने '12 प्र' की एक व्यवहारिक रणनीति विकसित की, जो कार्यालयों में हिंदी के सफल कार्यान्वयन का मार्गदर्शन करती है।

'12 प्र' की रणनीतिक रूपरेखा

1. प्रेरणा

किसी भी परिवर्तन की शुरुआत प्रेरणा से होती है। जब शीर्ष नेतृत्व स्वयं हिंदी में कार्य करता है, नोटिंग-ड्राफ्टिंग करता है और बैठकों में हिंदी का प्रयोग करता है, तो अधीनस्थ कर्मचारियों में स्वाभाविक उत्साह उत्पन्न होता है। प्रेरणा कार्य-संस्कृति को बदलने की पहली शर्त है।

2. प्रोत्साहन

मानव स्वभाव प्रशंसा और मान्यता से पुष्ट होता है। हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को प्रमाणपत्र, प्रशस्ति-पत्र अथवा नकद पुरस्कार देकर प्रोत्साहित करना आवश्यक है। इससे आत्मविश्वास बढ़ता है और अन्य कर्मचारी भी प्रेरित होते हैं।

3. प्रेम

भाषा के प्रति आत्मीयता विकसित किए बिना उसका स्थायी विकास संभव नहीं है। कार्यालय में यदि नेतृत्व हिंदी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखे और कर्मचारियों को सहज वातावरण दे, तो हिंदी का प्रयोग स्वाभाविक रूप से बढ़ता है।

4. पुरस्कार

राजभाषा विभाग द्वारा 'राजभाषा कीर्ति' और 'राजभाषा गौरव' जैसे पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। ये सम्मान संस्थागत उपलब्धियों को रेखांकित करते हैं और प्रतिस्पर्धी वातावरण का निर्माण करते हैं।

5. प्रशिक्षण

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान और केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा समय-समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। टिप्पण-लेखन, शब्दावली, अनुवाद और तकनीकी हिंदी के अभ्यास से कर्मचारियों की दक्षता बढ़ती है। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से ऑनलाइन प्रशिक्षण की व्यवस्था ने इस प्रक्रिया को और सुलभ बनाया है।

6. प्रयोग

भाषा का विकास निरंतर प्रयोग से ही संभव है। यदि कर्मचारी नियमित रूप से हिंदी में नोटिंग, पत्राचार और ई-ऑफिस कार्य करें, तो भाषा में सहजता आती है। प्रयोग से आत्मविश्वास बढ़ता है और अनुवाद-निर्भरता घटती है।

7. प्रचार

हिंदी के प्रचार-प्रसार का दायित्व संवैधानिक रूप से सुनिश्चित है। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हिंदी में अभिव्यक्ति से उसका गौरव बढ़ता है और कर्मचारियों को प्रेरणा मिलती है। यह संदेश जाता है कि हिंदी केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि कार्य-भाषा है।

8. प्रसार

राजभाषा कार्यान्वयन समितियों तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से हिंदी के प्रसार का कार्य किया जाता है। कार्यालयीन पत्रिकाओं का प्रकाशन, प्रतियोगिताएँ और संगोष्ठियाँ इस दिशा में प्रभावी साधन हैं।

9. प्रबंधन

कुशल प्रबंधन के बिना किसी भी नीति का क्रियान्वयन अधूरा रहता है। संस्था प्रमुख का दायित्व है कि वे राजभाषा संबंधी बैठकों की नियमित समीक्षा करें, लक्ष्यों का निर्धारण करें और प्रगति का आकलन करें।

10. पदोन्नति

राजभाषा विभाग में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों को समय–समय पर पदोन्नति देना आवश्यक है। इससे विभाग में ऊर्जा, निष्ठा और कार्य-प्रेरणा बनी रहती है।

11. प्रतिबद्धता

शीर्ष नेतृत्व-मंत्री, सचिव, अध्यक्ष अथवा प्रबंध निदेशक-की प्रतिबद्धता अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यदि नेतृत्व स्पष्ट संदेश दे कि हिंदी में कार्य करना प्राथमिकता है, तो संगठनात्मक संस्कृति स्वत: परिवर्तित होती है।

12. प्रयास

अंतत: सतत प्रयास ही सफलता की कुंजी है। नीति, प्रशिक्षण और प्रोत्साहन तभी सार्थक होंगे जब निरंतर प्रयास जारी रहेगा।

प्रसिद्ध कवि सोहनलाल द्विवेदी की पंक्तियाँ इस संदर्भ में अत्यंत प्रेरक हैं-

'लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।'

व्यवहारिक क्रियान्वयन : एक संस्थागत दृष्टिकोण

हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु '12 प्र' की रणनीति का समन्वित अनुपालन किया जा रहा है। राजभाषा समितियों की नियमित बैठकें आयोजित की जाती हैं, जिनमें प्रगति की समीक्षा और भावी लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रोत्साहन स्वरूप सम्मानित किया जाता है।

प्रतिवर्ष हिंदी सप्ताह और हिंदी पखवाड़ा आयोजित किए जाते हैं, जिनमें निबंध, नोटिंग-ड्राफ्टिंग, वाद-विवाद, कविता-पाठ और तकनीकी लेखन जैसी प्रतियोगिताएँ होती हैं। इससे कर्मचारियों में भाषा के प्रति रुचि और आत्मविश्वास विकसित होता है। पुस्तकालय में हिंदी पुस्तकों की नियमित खरीद की जाती है, जिससे अध्ययन और आत्म-विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

कार्यालय की गृह पत्रिका 'संकल्प' के माध्यम से कर्मचारियों को हिंदी में लेखन के लिए मंच उपलब्ध कराया जाता है। तकनीकी और प्रशासनिक विषयों पर हिंदी में लेख लिखने से भाषा का व्यावसायिक स्वरूप सुदृढ़ होता है। साथ ही, प्रशिक्षण कार्यशालाओं के माध्यम से व्यवहारिक हिंदी को बढ़ावा दिया जाता है।

निष्कर्ष

राजभाषा हिंदी का सफल कार्यान्वयन केवल नियमों का पालन नहीं, बल्कि संगठनात्मक संस्कृति का निर्माण है। प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रशिक्षण और प्रबंधन-इन सभी के समन्वय से ही हिंदी को वास्तविक अर्थों में कार्य-भाषा बनाया जा सकता है।

आज आवश्यकता है कि हम हिंदी को औपचारिकता नहीं, बल्कि कार्य-कुशलता और राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक के रूप में स्वीकार करें। सतत प्रयास, नेतृत्व की प्रतिबद्धता और कर्मचारियों की सहभागिता से कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का सशक्त और प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित किया जा सकता है।

हिंदी : अन्य भारतीय भाषाओं की सखी और सांस्कृतिक सेतु

सुनील यादव
कनिष्ठ तकनीशियन (डब्ल्यू पी एम)

भारत को यदि भाषाओं और बोलियों का देश कहा जाए तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ सैकड़ों भाषाएँ और हजारों बोलियाँ बोली जाती हैं। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को स्थान प्राप्त है, किंतु भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो देश में 1600 से अधिक बोलियाँ प्रचलित हैं। विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग भाषाएँ और बोलियाँ प्रयुक्त होती हैं। यही भाषाई विविधता भारत की सांस्कृतिक समृद्धि और बहुरंगी पहचान का आधार है।

इतनी व्यापक विविधता के बीच एक ऐसे सूत्र की आवश्यकता स्वाभाविक है, जो देश को भाषाई स्तर पर जोड़ सके। यह भूमिका हिंदी ने निभाई है। हिंदी न केवल उत्तर भारत में, बल्कि देश के विभिन्न भागों में समझी और बोली जाती है। इसी कारण विद्वान हिंदी को अन्य भारतीय भाषाओं की 'सखी' कहते हैं-अर्थात् ऐसी भाषा जो प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि सहयोगी और समन्वयकारी है।

भारतीय भाषाओं की विविधता

भारत का प्रत्येक राज्य अपनी विशिष्ट भाषा और साहित्यिक परंपरा के लिए जाना जाता है। उत्तर भारत में अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मैथिली, राजस्थानी और हरियाणवी जैसी भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं। पश्चिम बंगाल में बंगाली, महाराष्ट्र में मराठी, गुजरात में गुजराती, पंजाब में पंजाबी, ओडिशा में ओड़िया, असम में असमिया, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में तेलुगु, केरल में मलयालम तथा कर्नाटक में कन्नड़ प्रमुख भाषाएँ हैं। तमिलनाडु में तमिल का गौरवपूर्ण साहित्यिक इतिहास है।

इतनी विशाल भाषाई विविधता संवाद में कठिनाई उत्पन्न कर सकती थी, परंतु हिंदी ने इस विविधता को संतुलित करते हुए एक साझा मंच प्रदान किया। हिंदी ने किसी भाषा का स्थान नहीं लिया, बल्कि विभिन्न भाषाओं के बीच संवाद का सेतु बनकर कार्य किया।

स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी की भूमिका

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का मानना था कि हिंदी ही वह भाषा है जो पूरे देश को एक सूत्र में बाँध सकती है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जनसभाओं में दिए जाने वाले भाषण, नारे और घोषणाएँ प्राय: हिंदी में होती थीं, ताकि अधिक से अधिक लोग उन्हें समझ सकें।

हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं ने भी राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में उल्लेखनीय योगदान दिया। 'सरसवती', 'प्रताप' और 'कर्मयोगी' जैसी पत्रिकाओं ने जन-जागरण और राष्ट्रवाद की भावना को प्रबल किया। हिंदी ने केवल उत्तर भारत में ही नहीं, बल्कि बंगाल, महाराष्ट्र और दक्षिण भारत तक स्वतंत्रता आंदोलन की चेतना को प्रसारित किया।

हिंदी का ऐतिहासिक विकास

हिंदी का विकास एक दीर्घ भाषाई यात्रा का परिणाम है। इसका उद्भव संस्कृत से प्राकृत, अपभ्रंश और अवहट्ट की कड़ियों से होते हुए हुआ। यही विकास-क्रम अनेक अन्य भारतीय भाषाओं ने भी अपनाया। इस ऐतिहासिक निकटता के कारण हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में शब्द-साम्य, ध्वनि-साम्य और भाव-साम्य पाया जाता है।

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन ने हिंदी को जन-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया। संत कवियों जैसे कबीर, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई और अब्दुर्रहीम खान-ए-खाना ने सरल और लोक-बोधगम्य हिंदी में अपनी रचनाएँ कीं। इनकी काव्य-धारा पूरे भारत में सम्मानित और सराही गई। इससे हिंदी का भावात्मक विस्तार हुआ और वह विभिन्न भाषिक समुदायों के बीच आत्मीयता का माध्यम बनी।

हिंदी और अन्य भाषाओं का परस्पर संबंध

हिंदी का स्वरूप समावेशी है। इसने समय-समय पर अन्य भाषाओं से शब्द और अभिव्यक्तियाँ ग्रहण की हैं। हिंदी में मराठी, गुजराती, पंजाबी और बंगाली से आए अनेक शब्द मिलते हैं। उर्दू और फ़ारसी ने भी हिंदी को समृद्ध शब्दावली प्रदान की है। भोजपुरी, मैथिली, अवधी और राजस्थानी जैसी बोलियों ने हिंदी की अभिव्यक्ति को व्यापक और जीवंत बनाया है।

यह आदान-प्रदान एकतरफा नहीं है; हिंदी के शब्द भी अन्य भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त होते हैं। यह पारस्परिकता हिंदी को अन्य भाषाओं की 'सखी' सिद्ध करती है-वह किसी पर प्रभुत्व नहीं जमाती, बल्कि सहयोग करती है।

हिंदी और भारतीय संस्कृति

भारत के त्योहार, गीत, नृत्य और परंपराएँ बहुभाषी स्वरूप में विद्यमान हैं। हिंदी ने इन्हें राष्ट्रीय स्वर प्रदान किया। रामचरितमानस जैसी कृतियाँ केवल हिंदी क्षेत्र तक सीमित नहीं रहीं; वे पूरे भारत में श्रद्धा और भक्ति के साथ पढ़ी और गायी जाती हैं।

हिंदी सिनेमा और संगीत ने हिंदी को वैश्विक पहचान दिलाई है। देश के दक्षिणी राज्यों, पूर्वोत्तर भारत तथा विदेशों में भी हिंदी गीतों की लोकप्रियता इसका प्रमाण है। हिंदी फिल्मों ने विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच सांस्कृतिक संवाद को सुदृढ़ किया है।

आधुनिक युग में हिंदी

डिजिटल और तकनीकी युग में हिंदी का विस्तार निरंतर बढ़ रहा है। इंटरनेट पर हिंदी सामग्री की लोकप्रियता तेजी से बढ़ी है। समाचार पोर्टल, ब्लॉग, सोशल मीडिया और ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से हिंदी ने व्यापक पाठक-वर्ग तक पहुँच बनाई है।

वैश्विक तकनीकी कंपनियाँ भी हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को महत्व दे रही हैं। डिजिटल मंचों पर हिंदी की उपस्थिति ने उसे आधुनिक संचार का प्रभावी माध्यम बना दिया है। आज हिंदी केवल साहित्य की भाषा नहीं, बल्कि प्रशासन, तकनीक, मीडिया और व्यवसाय की भी भाषा बन रही है।

निष्कर्ष: भारत की वास्तविक शक्ति उसकी भाषाई और सांस्कृतिक विविधता में निहित है। हिंदी ने इस विविधता को एकता के सूत्र में बाँधने का कार्य किया है। वह किसी भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि सहयोगी और सहचरी है। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ परस्पर समृद्धि की भागीदार हैं।

इसलिए यह कहना पूर्णत: उचित है कि 'हिंदी अन्य भारतीय भाषाओं की सखी है।' जब हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ मिलकर आगे बढ़ेंगी, तभी भारत की सांस्कृतिक और भाषाई धरोहर और अधिक सशक्त, समृद्ध और विश्ववंदित होगी।

पदभार ग्रहण - निदेशक (उत्पादन एवं विपणन)

श्री पी. बाबू ने 7 अक्टूबर, 2025 से मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि) में निदेशक (उत्पादन और विपणन) का पदभार ग्रहण कर लिया है।

एक अनुभवी धातुकर्म इंजीनियर के तौर पर, श्री पी. बाबू विशेष धातुओं और मिश्र धातुओं के क्षेत्र में तीन दशकों से अधिक का अनुभव रखते हैं; इसमें विशेष इस्पात, सुपरमिश्र धातु और टाइटेनियम मिश्र धातु शामिल हैं। उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई से धातुकर्म इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री और डॉ. बी.आर. अंबेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, हैदराबाद से एमबीए की डिग्री प्राप्त की है।

वे 1997 में मिधानि में शामिल हुए थे और तब से उन्होंने विपणन, उत्पादन और सामरिक योजना कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विपणन के क्षेत्र में उन्होंने नए बाजार विकसित करने, निर्यात को पुनर्जीवित करने, ग्राहकों के साथ जुड़ाव को मजबूत करने और एयरोस्पेस, रक्षा, ऊर्जा तथा औद्योगिक अनुप्रयोगों जैसे सामरिक क्षेत्रों में प्रमुख ग्राहकों के साथ दीर्घकालिक साझेदारी बनाने में अहम योगदान दिया है।

उत्पादन प्रबंधन, प्रक्रिया आश्वासन और व्यवसाय विकास में उनकी गहरी विशेषज्ञता ने विशेष धातुओं व मिश्र धातुओं के क्षेत्र में मिधानि के विकास तथा नेतृत्व में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

मिधानि के निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) का पदभार ग्रहण करने पर संपादक मंडल की ओर से श्री पी. बाबू को बहुत–बहुत बधाई।

मासिक हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची

श्रुतलेख एवं सुलेख (हिंदी)

क्र.सं.	नाम	विभाग	स्थान
1	दीपक पार्थसारथी	मानव संसाधन	प्रथम
2	गरिमा ओझा	वित्त एवं लेखा	द्वितीय
3	ईश्वर प्रसाद	वाइड प्लेट मिल	तृतीय

श्रुतलेख एवं सुलेख (अन्य हिंदी)

क्र.सं.	नाम	विभाग	स्थान
1	वसुंधरा रिंगु	मानव संसाधन	प्रथम
2	शुभदीप घोष	क्रय	द्वितीय
3	एन. शिल्पा	मानव संसाधन	तृतीय

अंत्याक्षरी

क्र.सं.	नाम	विभाग	स्थान
1	रोहित निगुड़कर प्रशांत कुमार पी वर्षा	वित्त एवं लेखा	प्रथम
2	शुभदीप घोष अमित कुमार सिंह अमित सिंह	क्रय	द्वितीय
3	ईश्वर प्रसाद अबिनास साहू सुनील यादव	वाइड प्लेट मिल	तृतीय

अनुवाद

क्र.सं.	नाम	विभाग	स्थान
1	नीरडी स्रवंति	पी-1 इलेक्ट्रिकल मेंटनेंस	प्रथम
2	उमेश चेन्ना	मेल्ट-IV	द्वितीय
3	जी एस हरिवर्धन	मेल्ट-IV	तृतीय

सभी विजेताओं को पत्रिका संपादक मंडल की ओर से बहुत-बहुत

शुभकामनाएँ.....

मासिक हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण की झलकियाँ...

विजय कुमार चौधरी - वरिष्ठ क्रेन ऑपरेटर, मेल्ट शॉप

पी. वर्षा - कार्यपालक, वित्त एवं लेखा

अखिलेश कुमार - सहायक प्रबंधक (एएमडी)

गरिमा ओझा - सहायक प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

दीपक पार्थसारथी - प्रबंधक (मा.संसा.)

वसुंधरा रिंगु - सहायक प्रबंधक (मा.संसा.)

ईश्वर प्रसाद - प्रबंधक (डब्ल्यूपीएम)

उमेश चेन्ना - वरिष्ठ तकनीकी सहायक (मेल्ट-IV)

गायन प्रतियोगिता में उत्साह वर्धन पुरस्कार प्राप्त करते हुए अरिजीत बनर्जी, प्रबंधक (निगम योजना)

वित्त एवं लेखा विभाग के कर्मचारी अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए

वाइड प्लेट मिल के कर्मचारी अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का तृतीय पुरस्कार ग्रहण करते हुए

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद-सिकंदराबाद द्वारा मिधानि की महिला कर्मचारियों को नराकास की प्रतियोगिताओं में भाग लेने पर राजभाषा विदुषी सम्मान प्रदान किया गया।

गरिमा ओझा - सहायक प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

पी. वर्षा - कार्यपालक, ग्रेड-I (वित्त एवं लेखा)

मनाली लक्ष्मीदास हिंगरजिया - प्रबंधक (आईटी)

रणनीतिक प्रबंधन: संगठन की दीर्घकालिक सफलता की कुंजी (मिधानि के संदर्भ में एक समग्र विश्लेषण)

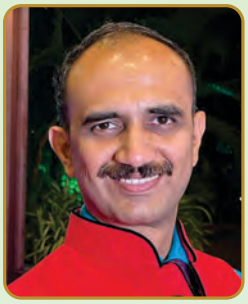

प्रतीक शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (विपणन)

प्रस्तावना

आज का व्यावसायिक और औद्योगिक परिवेश अत्यंत गतिशील, प्रतिस्पर्धात्मक और अनिश्चितताओं से भरा हुआ है। तकनीकी परिवर्तन, वैश्विक प्रतिस्पर्धा, संसाधनों की सीमाएँ, गुणवत्ता की अपेक्षाएँ और ग्राहकों की बढ़ती मांगें- ये सभी कारक किसी भी संगठन के सामने निरंतर चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं। ऐसे परिवेश में केवल पारंपरिक प्रबंधन पद्धतियाँ पर्याप्त नहीं होतीं। संगठन को दीर्घकालिक दृष्टि, स्पष्ट लक्ष्य, सुविचारित योजनाएँ और उनके प्रभावी क्रियान्वयन की आवश्यकता होती है। यही समग्र प्रक्रिया रणनीतिक प्रबंधन कहलाती है।

रणनीतिक प्रबंधन वह आधार है, जो किसी संगठन को वर्तमान परिस्थितियों का विश्लेषण करने, भविष्य की दिशा निर्धारित करने और उस दिशा में संगठित प्रयास करने की क्षमता प्रदान करता है। यह केवल योजना बनाकर छोड़ देने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि निरंतर समीक्षा, सुधार और अनुकूलन की सतत प्रणाली है।

मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि), भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत एक मिनी रत्न श्रेणी-1 सार्वजनिक उपक्रम, रणनीतिक प्रबंधन के सफल क्रियान्वयन का उत्कृष्ट उदाहरण है। 1973 में स्थापित मिधानि ने रक्षा, अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा, एयरोनॉटिक्स और जैव-चिकित्सा जैसे अत्यंत संवेदनशील क्षेत्रों में देश को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मिधानि की कार्यशैली यह दर्शाती है कि जब कोई संगठन सुव्यवस्थित रणनीतिक प्रबंधन अपनाता है, तो वह राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ तकनीकी उत्कृष्टता भी प्राप्त कर सकता है।

रणनीतिक प्रबंधन की परिभाषा और महत्व

रणनीतिक प्रबंधन वह प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत संगठन अपने दीर्घकालिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु योजनाएँ बनाता है, उन्हें लागू करता है और समय-समय पर उनका मूल्यांकन करता है। इसमें संगठन के आंतरिक और बाह्य वातावरण का विश्लेषण, लक्ष्यों का निर्धारण, रणनीतियों का निर्माण, उनका कार्यान्वयन तथा परिणामों का मूल्यांकन शामिल होता है।

रणनीतिक प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि संगठन बदलते परिवेश में भी अपने लक्ष्यों की ओर सही दिशा में आगे बढ़ता रहे। यह संगठन को भविष्य के लिए तैयार करता है, जोखिमों की पहचान करता है और अवसरों का लाभ उठाने में सहायता करता है।

रणनीतिक प्रबंधन की पाँच प्रमुख अवस्थाएँ

1. लक्ष्य निर्धारण

संगठन के दीर्घकालिक उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना रणनीतिक प्रबंधन की प्रथम अवस्था है। स्पष्ट लक्ष्य संगठन के सभी स्तरों पर दिशा और प्रेरणा प्रदान करते हैं।

2. पर्यावरण का विश्लेषण

इस चरण में संगठन अपने आंतरिक और बाह्य परिवेश का विश्लेषण करता है। इसमें SWOT विश्लेषण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- **बल (Strengths)** - संगठन की विशेषताएँ जो उसे प्रतिस्पर्धा में मजबूत बनाती हैं।
- **कमजोरियाँ (Weaknesses)** - वे सीमाएँ जो प्रगति में बाधा बन सकती हैं।
- **अवसर (Opportunities)** - बाहरी परिस्थितियाँ जो विकास का अवसर प्रदान करती हैं।
- **खतरे (Threats)** - संभावित जोखिम जो संगठन को प्रभावित कर सकते हैं।

3. रणनीति का निर्माण

पर्यावरण विश्लेषण के आधार पर संगठन अपनी रणनीतियों का निर्माण करता है, जिससे वह अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।

4. रणनीति का कार्यान्वयन

निर्मित रणनीतियों को संगठन के विभिन्न विभागों और स्तरों पर प्रभावी रूप से लागू करना आवश्यक होता है।

5. मूल्यांकन और नियंत्रण

रणनीतियों के परिणामों की निरंतर समीक्षा की जाती है और आवश्यकतानुसार सुधार किए जाते हैं।

रणनीतिक योजना (Strategic Planning)

रणनीतिक योजना वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से संगठन अपनी दिशा निर्धारित करता है, प्राथमिकताओं को स्थापित करता है और संसाधनों का उचित आवंटन करता है। यह रणनीतिक प्रबंधन का महत्वपूर्ण भाग है, जो भविष्य की स्पष्ट रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

रणनीतिक योजना के छह मुख्य तत्व

1. दृष्टिकोण (Vision) और मिशन (Mission)
2. SWOT विश्लेषण
3. लक्ष्य निर्धारण
4. रणनीतियाँ और कार्ययोजनाएँ
5. संसाधन आवंटन
6. प्रदर्शन का मूल्यांकन

रणनीतिक नियोजन के 6 प्रमुख तत्व

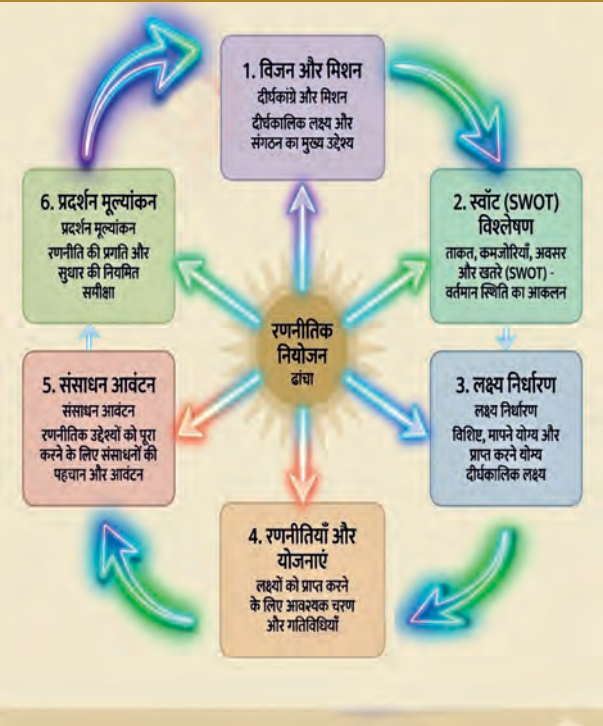

रणनीतिक योजना और रणनीतिक प्रबंधन में अंतर

रणनीतिक योजना एक दस्तावेज या प्रारूप है, जबकि रणनीतिक प्रबंधन एक सतत प्रक्रिया है। योजना दिशा देती है, जबकि प्रबंधन उस दिशा में निरंतर आगे बढ़ने का कार्य करता है।

मिधानि के संदर्भ में रणनीतिक प्रबंधन

मिधानि का कार्यक्षेत्र अत्यंत संवेदनशील और राष्ट्रीय महत्व का है। यह संगठन सुपरअलॉय, टाइटेनियम, विशेष मिश्र धातुएँ और विशेष स्टील्स का निर्माण करता है, जिनका उपयोग मिसाइलों, रॉकेटों, विमानों, नाभिकीय रिएक्टरों, जैव-चिकित्सा प्रत्यारोपण और आर्मरिंग इकाइयों में होता है।

ऐसे संवेदनशील क्षेत्रों में कार्य करने के लिए केवल उत्पादन क्षमता पर्याप्त नहीं होती, बल्कि दीर्घकालिक रणनीति, अनुसंधान एवं विकास, गुणवत्ता नियंत्रण, और संसाधनों के कुशल उपयोग की आवश्यकता होती है। मिधानि इन सभी पहलुओं को रणनीतिक प्रबंधन के माध्यम से सुनिश्चित करता है।

1. अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी) की भूमिका - मिधानि में केंद्रीय महत्व

मिधानि की आर एंड डी इकाई न केवल नई तकनीकों और उत्पादों के विकास के लिए सक्रिय है, बल्कि यह संगठन की **दीर्घकालिक प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता, आत्मनिर्भरता लक्ष्य और रणनीतिक उन्नति** का मुख्य स्तंभ भी है।

आर एंड डी का उद्देश्य तथा दिशा

- **मिधानि का आर एंड डी मुख्यत: उन्नत मिश्र धातुओं और सामग्रियों का निर्माण** करता है, जैसे कि नाइ-आधारित सुपरअलॉय, टाइटेनियम मिश्र धातु और विशेष इस्पात, जिनका उपयोग **एयरक्राफ्ट इंजनों, अंतरिक्ष प्रणालियों और रक्षा अनुप्रयोगों** में होता है।
- इसका लक्ष्य **भारतीय उद्योगों की तकनीकी आवश्यकता को पूरा करना और विदेशी तकनीकों पर निर्भरता कम करना** है।
- वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, पिछले वर्षों में **कई नई ग्रेड विकसित किए गए** हैं, जो बाजार की मांग और तकनीकी मानकों के अनुरूप हैं, जिससे **आयात-प्रतिस्थापन और निर्यात क्षमता** को भी बढ़ावा मिला है।

विशेष आर एंड डी प्रयास और पहल

1. **नवीन उत्पाद विकास:**
   - तीन भिन्न ग्रेड के **कास्ट नाइ-आधारित सुपरअलॉय** विकसित कर के उन्हें दोष-मुक्त कास्ट बार के रूप में एयरो-इंजन अनुप्रयोगों के लिए मंज़ूर किया गया।
2. **तकनीकी उन्नयन:**
   - आर एंड डी ने **कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित इमेज विश्लेषण प्रणाली** को अपनाया है, जो धातु के सूक्ष्म संरचना का पूर्वानुमान लगाने में गुणवत्ता मूल्यांकन की सटीकता बढ़ाती है। इससे निर्णय-लेना तेज़ और अधिक मानकीकृत हो गया है।
3. **आईपीआर और पेटेंट:**
   - मिधानि ने आर एंड डी गतिविधियों के अंतर्गत **कई पेटेंट और आईपीआर आवेदन** दायर किए हैं, जो भविष्य के नवाचार और तकनीकी नियंत्रण को सुदृढ़ करते हैं।

आर एंड डी का आर्थिक और रणनीतिक महत्व

- वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार आर एंड डी में नियमित निवेश कंपनी की **तकनीकी क्षमताओं को बढ़ाता है** और **उत्पादों की विविधता विकसित करता है**। इस प्रकार की रणनीति से मिधानि **स्वदेशी तकनीकी समाधान प्रदान करने वाला अग्रणी संगठन** बन रहा है।

2. गुणवत्ता और नवाचार - मिधानि की स्थिरता की आधारशिला

गुणवत्ता प्रबंधन और नवाचार - मिधानि के रणनीतिक लक्ष्यों का एक अनिवार्य हिस्सा हैं, ताकि उत्पाद हमेशा उच्चतम मानकों पर खरे उतरें।

गुणवत्ता नीति और मानकीकरण

मिधानि की **गुणवत्ता नीति** स्पष्ट करती है कि उसके द्वारा निर्मित सभी धातु और मिश्रधातु उत्पाद **लगातार सभी लागू आवश्यकताओं को पूरा करेंगे**, जिससे ग्राहक की संतुष्टि सर्वोपरि रहे। इसके लिए एक **सशक्त गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली** लागू की गई है।

प्रमाणन और मान्यता:

- मिधानि ISO 9001, ISO/IEC 17025, AS 9100 जैसे प्रमुख गुणवत्ता मानकों के अनुरूप **प्रमाणित** है।
- इसके उत्पादों और परीक्षण प्रक्रियाओं को कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा मान्यता प्राप्त है, जैसे **विमानन विभाग, अंतरिक्ष विभाग, परमाणु ऊर्जा विभाग, और एयरबस-बोइंग गुणवत्ता ऑडिट**।

गुणवत्ता नियंत्रण सुविधाएँ

मिधानि में व्यापक रूप से **आधुनिक परीक्षण और विश्लेषण सुविधाएँ** उपलब्ध हैं:

- **रासायनिक विश्लेषण, यांत्रिक और गैर-विनाशकारी परीक्षण**
- **माइक्रोस्ट्रक्चर विश्लेषण व मेटलोग्राफी सुविधाएँ**
- **उन्नत मशीनिंग और नमूना तैयार करने की सुविधाएँ**

ये सुविधाएँ सुनिश्चित करती हैं कि हर उत्पाद तकनीकी मानकों और ग्राहकों की अपेक्षाओं के अनुरूप हो।

नवाचार और गुणवत्ता पुरस्कार

मिधानि को गुणवत्तापरक गतिविधियों और निरंतर सुधार के लिए विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। मिसाल के तौर पर, **क्वालिटी सर्कल फोरम ऑफ इंडिया** द्वारा दिए गए **चार गोल्ड अवॉर्ड्स** ने गुणवत्ता और नवाचार में उसकी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया है।

3. **संसाधन प्रबंधन - मानव शक्ति का सशक्तिकरण**

किसी भी संगठन की **सबसे महत्वपूर्ण संपत्ति उसके कर्मचारी** होते हैं। मिधानि में संसाधन प्रबंधन विशेष रूप से मानव संसाधन (एचआर) और कर्मचारियों के कौशल विकास पर केंद्रित है, ताकि वह बदलते तकनीकी और व्यावसायिक वातावरण में सक्षम रूप से कार्य कर सके।

मानव संसाधन का विकास (एचआरडी)

मिधानि की **एचआरडी रणनीति** केवल भर्ती और प्रत्यक्ष प्रबंधन तक सीमित नहीं है, बल्कि कर्मचारी कौशल, क्षमता निर्माण और करियर उन्नति पर भी फोकस करती है:

- कर्मचारियों के लिए **प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रम**
- कौशल और ज्ञान को बढ़ाने के लिए **कोचिंग, मेंटरिंग और प्रदर्शन प्रबंधन**
- विशेष रूप से **दिव्यांग कर्मियों और सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े समूहों** को सशक्त बनाने के प्रयास

ये सभी पहल कार्यबल को अधिक लचीला, सक्षम और चुनौती-उदार बनाती हैं।

कर्मचारी संख्या और संरचना

वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार मिधानि में कर्मचारियों की कुल संख्या में संतुलित वृद्धि देखी गई है-जिसमें **नॉन-एक्जीक्यूटिव, सुपरवाइज़र और एक्जीक्यूटिव स्तर के कर्मी शामिल हैं**।

निष्कर्ष

मिधानि की **अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी), गुणवत्ता और नवाचार, तथा मानव संसाधन प्रबंधन**-तीनों ही तत्व कंपनी की **रणनीतिक प्रबंधन नीति** का केंद्रीय आधार हैं।

- **आर एंड डी** दूरदृष्टि, तकनीकी आत्मनिर्भरता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी भूमिका निभाता है।
- **गुणवत्ता और नवाचार** उच्चतम मानकों और समग्र प्रबंधन के ज़रिये ग्राहकों और राष्ट्रीय हितों की संतुष्टि सुनिश्चित करता है।
- **मानव शक्ति का सशक्तिकरण** संगठनात्मक अखंडता, कौशल क्षमता और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने की क्षमता को मजबूत बनाता है।

इन तीनों स्तंभों के समन्वित क्रियान्वयन से मिधानि न केवल राष्ट्रीय रणनीतिक आवश्यकताओं को पूरा करता है, बल्कि वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक उपक्रमों के समान उच्च तकनीकी मानकों तक पहुँच रहा है।

रणनीतिक प्रबंधन ढाँचा

रणनीतिक प्रबंधन एक चक्रीय प्रक्रिया है जिसमें विश्लेषण, योजना, क्रियान्वयन और मूल्यांकन निरंतर चलते रहते हैं। यह ढाँचा संगठन को बदलते परिवेश के अनुरूप स्वयं को ढालने में सक्षम बनाता है।

राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता में योगदान

मिधानि का रणनीतिक प्रबंधन केवल संगठनात्मक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र की आत्मनिर्भरता से जुड़ा हुआ है। 'आत्मनिर्भर भारत' के लक्ष्य की पूर्ति में मिधानि की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

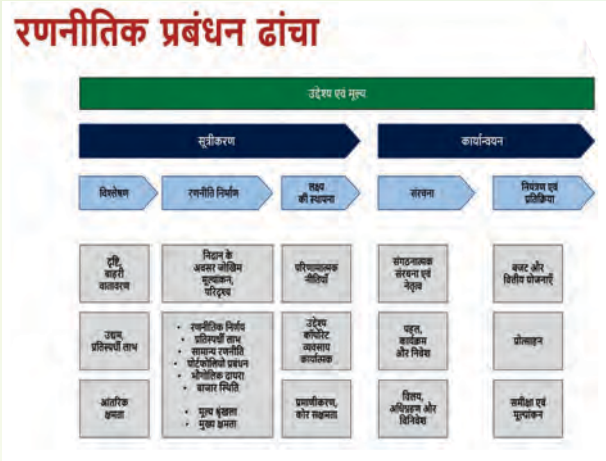

निष्कर्ष

रणनीतिक प्रबंधन किसी भी संगठन के लिए उसकी दीर्घकालिक सफलता का आधार है। यह संगठन को स्पष्ट दिशा, सुविचारित योजना, प्रभावी क्रियान्वयन और निरंतर सुधार की क्षमता प्रदान करता है।

मिधानि जैसे राष्ट्रीय महत्व के संगठन के लिए रणनीतिक प्रबंधन केवल एक प्रबंधन पद्धति नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का साधन है। यह सिद्ध करता है कि सुव्यवस्थित रणनीति और समर्पित क्रियान्वयन से कोई भी संगठन उत्कृष्टता की ऊँचाइयों को प्राप्त कर सकता है।

स्मार्ट विद्युत प्रणालियाँ: डाउनटाइम कम करने की कुंजी

के. उदया चंद्रिका
वरिष्ठ प्रबंधक (एचआरएम-अनुरक्षण)

सारांश

यह लेख मिधानि के रोलर हर्थ फर्नेस में स्मार्ट विद्युत प्रणालियों के कार्यान्वयन पर आधारित है। इसमें पुरानी प्रणाली की समस्याओं, किए गए तकनीकी उन्नयन - जैसे वीएफडी, सॉफ्ट स्टार्टर्स, पीएलसी + एचएमआई - तथा उनके परिणामों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस परियोजना के माध्यम से उपकरण उपलब्धता लगभग 99-100% तक पहुँची और ऊर्जा खपत में 20% से अधिक की कमी आई।

1. प्रस्तावना

आधुनिक औद्योगिक युग में, उत्पादन की निरंतरता और ऊर्जा दक्षता दो ऐसे स्तंभ हैं जिन पर किसी भी विनिर्माण संगठन की सफलता टिकी होती है। भारत के प्रमुख मिश्र धातु निर्माता - मिधानि - में दशकों पुराने रोलर हर्थ फर्नेस ने उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किंतु पुरानी विद्युत प्रणालियों के कारण बार-बार होने वाले ब्रेकडाउन, उच्च ऊर्जा खपत और कठिन रखरखाव जैसी गंभीर चुनौतियाँ संगठन की उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही थीं।

इन चुनौतियों के समाधान हेतु एक सुनियोजित आधुनिकीकरण परियोजना प्रारंभ की गई जिसमें स्मार्ट विद्युत प्रणालियों - वेरिएबल फ्रीक्वेंसी ड्राइव (वीएफडी), सॉफ्ट स्टार्टर्स और प्रोग्रामेबल लॉजिक कंट्रोलर (पीएलसा) सहित ह्यूमन मशीन इंटरफ़ेस (एचएमआई) - को अपनाया गया। यह लेख उसी परियोजना के उद्देश्यों, कार्यान्वयन की प्रक्रिया और प्राप्त परिणामों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2. रोलर हर्थ फर्नेस - एक परिचय

रोलर हर्थ फर्नेस एक विशेष प्रकार का औद्योगिक उपकरण है जिसमें घूर्णनशील रोलर्स की सहायता से सामग्री को हीटिंग चैंबर के भीतर से निरंतर प्रवाहित किया जाता है। यह भट्टी मुख्यत: धातुओं को निश्चित तापमान पर, निश्चित अवधि तक गर्म करने के लिए डिज़ाइन की गई है।

2.1 मिधानि में रोलर हर्थ फर्नेस

मिधानि में स्थापित रोलर हर्थ फर्नेस निम्नलिखित विशेषताओं से युक्त है -

- यह एलपीजी (LPG) प्रज्वलित भट्टी है जिसे (Drever UK) ड्रेवर यूके द्वारा निर्मित किया गया है।
- इस भट्टी की तापमान सीमा 850°C से 1200°C तक है।
- यह भट्टी विभिन्न मिश्र धातुओं (Alloys) से निर्मित शीट और स्ट्रीप के एनीलिंग तथा शीट फिनिशिंग मिल की इनपुट शीट को गर्म करने के लिए प्रयुक्त होती है।
- यह फर्नेस लगभग 40 वर्ष पुरानी है और इसकी भट्टी इकाइयों में रोलर्स माइल्ड स्टील से बने हैं।
- सभी रोलर्स गियर बॉक्स सहित मोटरों द्वारा संचालित होते हैं।

2.2 फर्नेस की संरचना

रोलर हर्थ फर्नेस की मुख्य संरचना निम्नलिखित भागों से मिलकर बनती है -

- चार्ज टेबल - सामग्री प्रविष्टि क्षेत्र
- फर्नेस सेक्शन - मुख्य तापन क्षेत्र
- क्वेंच यूनिट - शीतलन इकाई
- फास्ट डिस्चार्ज सेक्शन - त्वरित निष्कासन क्षेत्र
- डिस्चार्ज टेबल - निर्गम क्षेत्र

♦ संचालन की विशेषता

एनीलिंग प्रक्रिया में शीट, चार्ज टेबल से फर्नेस सेक्शन, क्वेंच यूनिट और डिस्चार्ज टेबल की दिशा में प्रवाहित होती है। रोलिंग प्रक्रिया में शीट की दिशा भिन्न होती है - वह फास्ट डिस्चार्ज सेक्शन से होकर पुन: मिल की ओर भेजी जाती है। इस प्रकार, एक ही फर्नेस दोनों प्रक्रियाओं के लिए उपयुक्त है।

3. ताप उपचार प्रक्रियाएँ

रोलर हर्थ फर्नेस का उपयोग अनेक महत्वपूर्ण धातुकर्म प्रक्रियाओं में किया जाता है। इनमें से प्रमुख प्रक्रियाएँ निम्नलिखित हैं -

3.1 एनीलिंग

एनीलिंग एक प्रमुख ऊष्मा उपचार प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य धातुओं को नरम बनाना, उनकी तन्यता में वृद्धि करना और मशीनीकरण को सुगम बनाना है। इस प्रक्रिया में सामग्री को उसके पुन:क्रिस्टलीकरण तापमान से ऊपर, किंतु गलनांक से नीचे, गर्म किया जाता है। इसके पश्चात् उसे धीरे-धीरे ठंडा किया जाता है जिससे -

- आंतरिक तनाव समाप्त होता है।
- क्रिस्टल संरचना परिष्कृत होती है।
- धातु के भौतिक गुणों में समग्र सुधार होता है।

3.2 अन्य ताप उपचार प्रक्रियाएँ

एनीलिंग के अतिरिक्त यह फर्नेस निम्नलिखित प्रक्रियाओं के लिए भी प्रयुक्त होती है -

- हार्डनिंग - धातु को कठोर बनाने की प्रक्रिया
- टेम्परिंग - कठोरता और लचीलेपन में संतुलन स्थापित करना
- नॉर्मलाइजिंग - सूक्ष्म संरचना को एकसमान बनाना
- रोलिंग के लिए हीटिंग - शीट को रोलिंग से पूर्व उचित तापमान पर लाना

4. पुरानी प्रणाली में समस्याएँ

परियोजना प्रारंभ होने से पूर्व, मिधानि के रोलर हर्थ फर्नेस में निम्नलिखित गंभीर समस्याएँ विद्यमान थीं, जो उत्पादन, ऊर्जा और अनुरक्षण - तीनों पक्षों को प्रभावित कर रही थीं -

⚠ तकनीकी समस्याएँ	परिचालन प्रभाव
• रोल मोटर और क्लच डीसी प्रकार के थे - रखरखाव अत्यंत कठिन • बाज़ार में स्पेयर पार्ट्स की अनुपलब्धता • दोष का पता लगाने में कठिनाई • लंबे ब्रेकडाउन घंटे	• उच्च मरम्मत लागत और लंबा मरम्मत समय • बार-बार ब्रेकडाउन के कारण उपकरण उपलब्धता में कमी • एलपीजी और बिजली की अत्यधिक बर्बादी • उत्पादन में भारी हानि

5. परियोजना के उद्देश्य

उपर्युक्त समस्याओं के निवारण हेतु, प्रबंधन ने एक सुव्यवस्थित आधुनिकीकरण परियोजना की रूपरेखा तैयार की। इस परियोजना के चार प्रमुख लक्ष्य निर्धारित किए गए -

परियोजना के प्रमुख लक्ष्य		
1	99% उपकरण उपलब्धता	बार-बार होने वाले ब्रेकडाउन को समाप्त कर उपकरण की उपलब्धता को 99% से अधिक बनाए रखना।
2	ब्रेकडाउन समय में कमी	दोष पहचान को सरल बनाकर और आधुनिक नियंत्रण प्रणाली अपनाकर ब्रेकडाउन समय को न्यूनतम करना।
3	ऊर्जा खपत में कटौती	स्मार्ट विद्युत उपकरणों द्वारा बिजली और एलपीजी की खपत में उल्लेखनीय कमी लाना।
4	अनुरक्षण लागत में कमी	DC घटकों को मानकीकृत AC घटकों से प्रतिस्थापित कर रखरखाव लागत घटाना।

6. तकनीकी उन्नयन - कार्यान्वयन

परियोजना के अंतर्गत तीन प्रमुख तकनीकी उन्नयन किए गए। प्रत्येक उन्नयन का उद्देश्य, कार्यसिद्धांत और लाभ नीचे विस्तार से वर्णित है -

6.1 ब्लोअर मोटर्स के लिए सॉफ्ट स्टार्टर्स

पुरानी प्रणाली में ब्लोअर मोटर्स को चालू करने के लिए डोल (डीओएल - डायरेक्ट ऑन लाइन) स्टार्टर्स का उपयोग होता था। ये स्टार्टर्स मोटर को तुरंत पूर्ण वोल्टेज पर चालू करते थे जिससे अत्यधिक इनरश करंट और यांत्रिक झटका उत्पन्न होता था।

सॉफ्ट स्टार्टर - कार्य सिद्धांत

सॉफ्ट स्टार्टर एक ऐसा विद्युत उपकरण है जो किसी भी इलेक्ट्रिक मोटर को सुचारू रूप से चालू करने में सक्षम बनाता है। तुरंत पूर्ण वोल्टेज देने के बजाय, यह वोल्टेज को धीरे-धीरे एवं नियंत्रित तरीके से बढ़ाता है। इससे इनरश करंट में उल्लेखनीय कमी आती है और मोटर तथा उससे जुड़े उपकरणों पर यांत्रिक तनाव भी न्यूनतम होता है - जिससे उपकरण का जीवनकाल बढ़ता है।

सॉफ्ट स्टार्टर्स के कार्यान्वयन से निम्नलिखित लाभ प्राप्त हुए -

- ऊर्जा खपत में प्रत्यक्ष कमी
- मोटर की दीर्घायु में वृद्धि
- यांत्रिक घटकों पर टूट-फूट में कमी
- रखरखाव अंतराल में वृद्धि

6.2 रोल मोटर्स के लिए एसी मोटर्स और वीएफडी

रोलर्स को चलाने वाली पुरानी डीसी मोटरों को उच्च ऊर्जा दक्षता वाली आईई3 श्रेणी की एसी मोटरों से प्रतिस्थापित किया गया। गति नियंत्रण के लिए प्रत्येक एसी मोटर के साथ वेरिएबल फ्रीक्वेंसी ड्राइव (वीएफडी) लगाए गए।

⚡ वीएमडी (वीएफडी) - कार्य सिद्धांत एवं लाभ

वेरिएबल फ्रीक्वेंसी ड्राइव (वीएफडी) एक बुद्धिमान नियंत्रण उपकरण है जो इलेक्ट्रिक मोटरों की गति को सटीक रूप से नियंत्रित करता है। यह इनपुट आवृत्ति (फ्रीक्वेंसी) को परिवर्तित कर मोटर को आवश्यकतानुसार न्यूनतम से अधिकतम गति पर चलाता है - जिससे ऊर्जा की बचत, मोटर का दीर्घ जीवनकाल और परिचालन लागत में कमी सुनिश्चित होती है।

डीसी से एसी + वीएफडी प्रणाली में स्थानांतरण के प्रमुख लाभ -

- डीसी मोटरों की ब्रश और कम्यूटेटर रखरखाव समस्या समाप्त
- आईई3 श्रेणी की एसी मोटरें अधिक ऊर्जा-दक्ष
- वीएफडी द्वारा सटीक गति नियंत्रण - प्रक्रिया गुणवत्ता में सुधार
- स्पेयर पार्ट्स की उपलब्धता में आसानी - मानकीकृत घटक
- कुल परिचालन एवं रखरखाव लागत में उल्लेखनीय कटौती

6.3 पीएलसी और एचएमआई आधारित नियंत्रण प्रणाली

पुराने फर्नेस में नियंत्रण के लिए रिले लॉजिक सर्किट का उपयोग होता था। यह प्रणाली जटिल, समस्या-निदान में कठिन और आधुनिक उत्पादन आवश्यकताओं के लिए अपर्याप्त थी। इसे अत्याधुनिक पीएलसी (प्रोग्रामेबल लॉजिक नियंत्रक) और एचएमआई (ह्युमन मशीन इंटरफेस) प्रणाली से प्रतिस्थापित किया गया।

- **पीएलसी + एचएमआई - स्मार्ट नियंत्रण का सार**

पीएलसी एक औद्योगिक कंप्यूटर है जो फर्नेस के सभी विद्युत एवं यांत्रिक संचालन को प्रोग्रामयोग्य तर्क ((प्रोग्रामेबल लॉजिक) के आधार पर नियंत्रित करता है। एचएमआई एक ग्राफिकल इंटरफ़ेस है जो ऑपरेटर को फर्नेस की वास्तविक समय की स्थिति देखने, मापदंड निर्धारित करने और आवश्यकतानुसार हस्तक्षेप करने की सुविधा प्रदान करता है। इस संयोजन से दोष-निदान अत्यंत सरल और त्वरित हो गया है।

पीएलसी + एचएमआई प्रणाली के कार्यान्वयन से -

- नियंत्रण प्रणाली में पारदर्शिता और विश्वसनीयता आई
- रीयल-टाइम मॉनिटरिंग सक्षम हुई
- दोष का त्वरित पता लगाना संभव हुआ - ब्रेकडाउन समय में भारी कमी
- प्रक्रिया मापदंडों का डिजिटल अभिलेखन संभव हुआ
- कम प्रशिक्षित ऑपरेटरों द्वारा भी कुशल संचालन सुलभ

6.4 उन्नयन का सारांश - तुलनात्मक तालिका

7. परिणाम एवं उपलब्धियाँ

स्मार्ट विद्युत प्रणालियों के सफल कार्यान्वयन के पश्चात् वर्ष 2023 और वर्ष 2024 के आँकड़ों की तुलना से निम्नलिखित उत्साहजनक परिणाम सामने आए -

7.1 ऊर्जा खपत में कमी

क्र.सं.	पुरानी प्रणाली	नई/उन्नत प्रणाली
1	डीसी रोल मोटर्स	आईई3 एसी मोटर्स +
2	डोल स्टार्टर्स (ब्लोअर)	वीएफडी सॉफ्ट स्टार्टर्स
3	रिले लॉजिक नियंत्रण सर्किट	पीएलसी + एचएमआई
4	मैन्युअल क्लच संचालन	प्रणाली स्वचालित क्लच
5	अनुपलब्ध स्पेयर पार्ट्स	नियंत्रण मानकीकृत एसी घटक

नीचे दी गई तालिका अप्रैल से जुलाई के मासिक ऊर्जा खपत डेटा की तुलना प्रस्तुत करती है -

'स्मार्ट विद्युत प्रणालियों के कार्यान्वयन के बाद ऊर्जा खपत में औसतन 20% से अधिक की कमी आई।'

7.2 उपकरण उपलब्धता में सुधार

नीचे दी गई तालिका उपकरण उपलब्धता के मासिक प्रतिशत की तुलना प्रस्तुत करती है -

माह	ऊर्जा खपत वर्ष-23 (kWh)	ऊर्जा खपत वर्ष-24 (kWh)	कमी (%)
अप्रैल	60	40	~33%
मई	50	30	~40%
जून	70	50	~29%
जुलाई	40	20	~50%

'परियोजना के बाद उपकरण उपलब्धता लगभग 99% से 100% तक पहुँच गई - जो परियोजना का प्राथमिक लक्ष्य था।'

7.3 अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ

- डीसी मोटरों और क्लच के जटिल रखरखाव से मुक्ति - अनुरक्षण लागत में उल्लेखनीय कमी।

माह	उपलब्धता वर्ष-23 (%)	उपलब्धता वर्ष-24 (%)	सुधार
अप्रैल	90%	99%	↑ 9%
मई	75%	100%	↑ 25%
जून	80%	98.7%	↑ 18.7%
जुलाई	92%	99%	↑ 7%

- पीएलसी+एचएमआई के माध्यम से दोष निदान त्वरित - ब्रेकडाउन के घंटे घटे।
- मानकीकृत एसी घटकों के कारण स्पेयर पार्ट्स की उपलब्धता सुनिश्चित।
- एलपीजी की बर्बादी में कमी - ऊर्जा दक्षता में समग्र सुधार।
- उत्पादन की निरंतरता और गुणवत्ता में सुधार।

8. निष्कर्ष

मिधानि के रोलर हर्थ फर्नेस की इस आधुनिकीकरण परियोजना ने यह सिद्ध किया है कि स्मार्ट विद्युत प्रणालियों को अपनाना केवल तकनीकी उन्नयन नहीं, बल्कि एक रणनीतिक निवेश है। वीएफडी, सॉफ्ट स्टार्टर्स और पीएलसी+एचएमआई जैसी प्रौद्योगिकियाँ, जब एकीकृत रूप से कार्यान्वित की जाती हैं, तो वे -

- उत्पादन की निरंतरता (99%+ उपकरण उपलब्धता) सुनिश्चित करती हैं,
- ऊर्जा की बर्बादी (20% की कमी) को नियंत्रित करती हैं,
- रखरखाव की जटिलता और लागत को घटाती हैं, तथा
- कर्मचारियों के कार्यभार और त्रुटि की संभावना को कम करती हैं।

यह परियोजना भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र के अन्य उपक्रमों के लिए भी एक प्रेरणादायक उदाहरण है। जहाँ पुराने उपकरण बार-बार उत्पादन बाधित करते हैं, वहाँ स्मार्ट विद्युत प्रणालियों का एकीकरण न केवल डाउनटाइम कम करता है, बल्कि दीर्घकालिक आर्थिक लाभ भी सुनिश्चित करता है।

- **परियोजना की मुख्य सीख**

डाउनटाइम की समस्या केवल यांत्रिक नहीं, बल्कि विद्युत और नियंत्रण प्रणाली की भी होती है। स्मार्ट विद्युत प्रणालियाँ - वीएफडी, सॉफ्ट स्टार्टर और पीएलसी+एचएमआई - मिलकर एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र बनाती हैं जिसमें उपकरण स्वयं अपनी स्थिति की जानकारी देता है, ऊर्जा का कुशल उपयोग करता है और अनुरक्षण कार्य को सरल बनाता है। यही है - डाउनटाइम कम करने की असली कुंजी।

✦ ✦ ✦

मिधानि नवयुवाओं के भविष्य को संवारते हुए

सीएसआर पहल के तहत दि अक्षय पात्र फाऊंडेशन के सहयोग से मिधानि ने हैदराबाद के सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए प्रधानमंत्री पोषण कार्यक्रम के अंतर्गत वर्ष 2025–26 हेतु 3,04,879 मध्याह्न भोजन प्रायोजित किया। मिधानि के सीएमडी डॉ. एसवीएस नारायण मूर्ति ने श्रीमती के. मधुबाला, निदेशक (वित्त), श्री पी. बाबू निदेशक (उत्पादन एवं विपणन), श्री हरि कृष्ण वी., अपर महाप्रबंधक (प्रभारी, मा.संसा.), श्री एमपी रमेश, अपर महाप्रबंधक (प्रभारी सुरक्षा, ईएमएस और टी एंड डी) और श्रीमती एआर रश्मि, वरिष्ठ प्रबंधक (मा.संसा.) के साथ मिलकर, अक्षय पात्र फाउंडेशन के अधिकारियों को प्रायोजित राशि का चेक सौंपा। इस अवसर पर कृतज्ञता स्वरूप में दि अक्षय पात्र फाऊंडेशन ने मिधानि को कृतज्ञता प्रमाण पत्र से सम्मानित किया।

वंदे मातरम् के 150 वर्ष : राष्ट्रभावना, स्वाभिमान और सांस्कृतिक चेतना का अमर गान

डॉ. बी. बालाजी
प्रबंधक (हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार)
मिधानि

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में यदि किसी एक गीत ने जनमानस की चेतना को झकझोरा, गुलामी की जंजीरों में जकड़े लोगों के भीतर आत्मगौरव जगाया और राष्ट्रप्रेम की ज्योति प्रज्वलित की, तो वह गीत है - 'वंदे मातरम्'। यह केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि भारत की आत्मा का स्वर है। यह वह पुकार है, जिसने करोड़ों भारतीयों को एक सूत्र में बाँधा और मातृभूमि के लिए सर्वस्व समर्पित करने की प्रेरणा दी। वर्ष 2025-26 में वंदे मातरम् अपनी रचना के 150 वर्ष पूर्ण कर रहा है। यह अवसर केवल एक गीत की वर्षगाँठ नहीं, बल्कि उस राष्ट्रीय चेतना के पुनर्स्मरण का पर्व है, जिसने पराधीन भारत को स्वतंत्रता की राह दिखाई।

वंदे मातरम् : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1857 की क्रांति के लगभग 18 वर्षों के बाद अर्थात 1875 में भारतीयों के जीवन में ऊर्जा का संचार करने वंदे मातरम् गीत का जन्म हुआ। उस समय भारत अंग्रेजी शासन के दमनकारी चक्र में फँसा हुआ था। भारतीय समाज सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर निराशा से ग्रस्त था। अंग्रेजों की नीतियाँ भारतीयों के आत्मसम्मान को कुचल रही थीं। ऐसे समय में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने मातृभूमि को देवी के रूप में चित्रित करते हुए एक ऐसे अमर गीत की रचाना की, जिसने भारतीयों में स्वाभिमान, साहस और राष्ट्रभक्ति का संचार किया। वही अमर गीत है - वंदे मातरम्। महान साहित्यकार बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने वंदे मातरम् की रचना 7 नवंबर 1875 को अक्षय नवमी के पावन दिन की थी।

यह गीत पहली बार बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा स्थापित बंगाली साहित्यिक पत्रिका बंगदर्शन में प्रकाशित हुआ और बाद में उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंदमठ' (1882) में शामिल किया गया। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने आनंदमठ में संन्यासी विद्रोह की कथा के माध्यम से अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष का चित्रण किया था। वंदे मातरम् उस संघर्ष की आत्मा बनकर उभरता है।

गीत का अर्थ, भाव और सांस्कृतिक दर्शन

'वंदे मातरम्' का शाब्दिक अर्थ है - *माता, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।* यहाँ माता से तात्पर्य भारत माता से है। गीत की प्रारंभिक पंक्तियाँ-

सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्, शस्यश्यामलाम् मातरम्...

इन पंक्तियों में भारत की प्राकृतिक समृद्धि, हरित खेत, शीतल पवन, निर्मल जल और उर्वर भूमि का अत्यंत सजीव चित्रण है। यह वर्णन केवल प्रकृति का चित्रण नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति के उस दर्शन का प्रतीक है, जो धरती को माँ के रूप में पूजता है।

गीत में भारतभूमि को लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा के रूप में प्रस्तुत किया गया है-समृद्धि, ज्ञान और शक्ति का प्रतीक। यह राष्ट्र को केवल भौगोलिक सीमा नहीं, बल्कि एक जीवंत मातृशक्ति के रूप में देखने की दृष्टि देता है।

प्रथम पद

सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्, शस्यश्यामलाम् मातरम्। वंदे मातरम्।।

भावार्थ :

हे मातृभूमि! तुम जल से परिपूर्ण, फल-फूल से सम्पन्न, मलय पर्वत की शीतल वायु से शीतल और हरे–भरे खेतों से आच्छादित हो। हे माँ! मैं तुम्हें नमन करता हूँ।

द्वितीय पद

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्, फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्, सुहासिनीम सुमधुर भाषिणीम्, सुखदां वरदां मातरम्। वंदे मातरम्।।

भावार्थ :

हे माँ! तुम्हारी रातें चाँदनी से पुलकित रहती हैं, वृक्षों की पत्तियाँ और फूल तुम्हारी शोभा बढ़ाते हैं। तुम्हारी वाणी मधुर है, तुम सुख देने वाली और वरदान देने वाली हो। हे मातृभूमि! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

तृतीय पद

कोटि–कोटि कंठ कल-कल निनाद कराले, कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले। के बोले माँ तुमि अबले? बहुबलधारिणीं, नमामि तारिणीं, रिपुदलवारिणीं मातरम्। वंदे मातरम्।।

भावार्थ :

करोड़ों कंठों की ध्वनि और करोड़ों भुजाओं की शक्ति से परिपूर्ण माँ, कौन कह सकता है कि तुम अबला हो? तुम असीम शक्ति की धारण करने वाली हो, शत्रुओं का नाश करने वाली और संतानों को संकट से पार लगाने वाली हो। हे माँ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

चतुर्थ पद

तुमि विद्या, तुमि धर्म, तुमि ह्रदि, तुमि मर्म। त्वं हि प्राणा: शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति, ह्रदयें तुमि माँ भक्ति, तोमारि प्रतिमा गढ़ि मन्दिरे-मन्दिरे। वंदे मातरम्।।

भावार्थ :

हे माँ! तुम ही ज्ञान हो, तुम ही धर्म हो, तुम ही ह्रदय और आत्मा हो। तुम ही हमारे प्राण हो। हमारे भुजाओं की शक्ति तुम हो, ह्रदय की भक्ति तुम हो। तुम्हारी प्रतिमा हर मंदिर में स्थापित है। हे माँ! मैं तुम्हें नमन करता हूँ।

पंचम पद

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी, कमला कमलदलविहारिणी, वाणी विद्यादायिनी। नमामि त्वाम्, नमामि कमलाम्, अमलाम्, अतुलाम्, सुजलां सुफलां मातरम्। वंदे मातरम्।।

भावार्थ :

हे माँ! तुम दस अस्त्र-शस्त्र धारण करने वाली दुर्गा हो, कमल पर विराजने वाली लक्ष्मी हो, ज्ञान देने वाली सरस्वती हो। तुम पवित्र, अतुलनीय और जल-फल से सम्पन्न हो। हे माँ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

षष्ठम पद

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्, धरणीं भरिणीं मातरम्। वंदे मातरम्।।

भावार्थ :

हे माँ! तुम हरितवर्णा, सरल स्वभाव वाली, मधुर मुस्कान से सुशोभित और संपूर्ण धरा को धारण करने वाली हो। हे मातृभूमि! मैं तुम्हें नमन करता हूँ।

समग्र भाव :

इस गीत में मातृभूमि को देवी स्वरूप मानकर उसकी प्राकृतिक सुंदरता, शक्ति, ज्ञान, समृद्धि और करुणा का वर्णन किया गया है। यह केवल प्रकृति स्तुति नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति समर्पण, भक्ति और गौरव की अभिव्यक्ति है।

स्वतंत्रता संग्राम में वंदे मातरम् की भूमिका

उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के प्रारंभ में वंदे मातरम् भारतीय राष्ट्रवाद का नारा बन गया। 1896 में गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर ने कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में इसे गाया। इसके बाद यह कांग्रेस के कार्यक्रमों और राष्ट्रीय आंदोलनों का नियमित हिस्सा बन गया।

1905 में बंगाल विभाजन के विरोध में जब स्वदेशी आंदोलन प्रारंभ हुआ, तब वंदे मातरम् प्रतिरोध का उद्घोष बन गया। हजारों लोग सड़कों पर उतरकर 'वंदे मातरम्' का गान करते हुए अंग्रेजी शासन के विरुद्ध खड़े हो गए। अंग्रेज सरकार इसकी लोकप्रियता से भयभीत हो गई और कई स्थानों पर इसके सार्वजनिक गायन पर प्रतिबंध लगा दिया।

विदेशों में भी इसका प्रभाव स्पष्ट दिखाई दिया। मैडम भीकाजी कामा द्वारा स्टटगार्ट, जर्मनी में फहराए गए भारतीय ध्वज पर 'वंदे मातरम्' अंकित था। मदनलाल ढींगरा ने फांसी से पहले 'वंदे मातरम्' का उद्घोष किया। श्री अरविंद ने इसे आध्यात्मिक ऊर्जा का स्रोत बताया।

राष्ट्रीय गीत का दर्जा

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा में डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने घोषणा की कि जहाँ जन गण मन राष्ट्रगान होगा, वहीं वंदे मातरम् को राष्ट्रीय गीत के रूप में समान सम्मान दिया जाएगा। संविधान में भले ही इसका स्पष्ट उल्लेख न हो, परंतु इसकी ऐतिहासिक भूमिका को देखते हुए इसे राष्ट्रीय प्रतीक का दर्जा प्राप्त है।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में 150वीं वर्षगाँठ का राष्ट्रीय स्मरणोत्सव

7 नवंबर 2025 को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में एक वर्ष तक चलने वाले राष्ट्रव्यापी स्मरणोत्सव का उद्घाटन किया। इस अवसर पर स्मारक डाक टिकट और स्मारक सिक्का जारी किया गया। देशभर में सार्वजनिक स्थलों पर प्रात:काल सामूहिक रूप से वंदे मातरम् का गायन किया गया।

प्रधानमंत्री ने अपने उद्बोधन में कहा-

'वंदे मातरम् केवल एक शब्द नहीं है, यह एक मंत्र है, एक ऊर्जा है, एक सपना है और एक संकल्प है।'

उन्होंने कहा कि यह गीत हमें हमारे इतिहास से जोड़ता है, वर्तमान में आत्मविश्वास भरता है और भविष्य के लिए प्रेरणा देता है। उन्होंने गीत की पहली पंक्ति 'सुजलाम् सुफलाम्' का उल्लेख करते हुए इसे भारत की प्राकृतिक समृद्धि और सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक बताया।

प्रधानमंत्री ने कहा-

'औपनिवेशिक काल में वंदे मातरम् यह घोषणा बन गया था कि भारत सवतंत्र होगा, और माँ भारती की बेड़ियाँ उसके अपने पुत्र तोड़ेंगे।'

उन्होंने श्री अरविंद, महात्मा गांधी, और भीकाजी कामा जैसे स्वतंत्रता सेनानियों का उल्लेख करते हुए बताया कि यह गीत स्वतंत्रता आंदोलन की आत्मा था।

प्रधानमंत्री ने यह भी रेखांकित किया कि आज आत्मनिर्भर भारत, विकसित भारत 2047, नारी शक्ति और पर्यावरण संरक्षण जैसे राष्ट्रीय संकल्प भी उसी भावना से जुड़े हैं, जिसकी अभिव्यक्ति वंदे मातरम् में होती है।

प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम और जनभागीदारी

इस अवसर पर संस्कृति मंत्रालय द्वारा **'वंदे मातरम्' भारत के स्वतंत्रता संग्राम के लिए आह्वान'** विषय पर भव्य प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसमें 1905 की ग्रामोफोन रिकॉर्डिंग सहित अनेक ऐतिहासिक दस्तावेज प्रदर्शित किए गए। वर्ष भर देशभर में सेमिनार, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वृक्षारोपण अभियान, विद्यालयों में प्रतियोगिताएँ और जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों और सार्वजनिक स्थलों पर वंदे मातरम् से संबंधित संदेश प्रदर्शित किए जा रहे हैं। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर विशेष कार्यक्रम प्रसारित किए जा रहे हैं।

वंदे मातरम् और पर्यावरणीय चेतना

गीत की पंक्तियों में प्रकृति का जो सजीव चित्रण है, वह हमें पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी देता है। 'सुजलाम् सुफलाम्' केवल शब्द नहीं, बल्कि जल, वन, भूमि और प्रकृति की रक्षा का आह्वान है। आज जब पर्यावरणीय चुनौतियाँ बढ़ रही हैं, तब वंदे मातरम् हमें प्रकृति को माँ मानकर उसके संरक्षण का दायित्व याद दिलाता है।

भावनात्मक एकता का सूत्र

भारत विविधताओं का देश है-भाषाएँ, धर्म, परंपराएँ, वेशभूषाएँ। परंतु वंदे मातरम् इन सबको एक सूत्र में पिरो देता है। यह गीत किसी एक समुदाय का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारत का भावगीत है। यह भावनात्मक एकता का सूत्र है, जो हमें भारतीय होने का गर्व कराता है।

आज के भारत में वंदे मातरम् की प्रासंगिकता

आज भारत विज्ञान, तकनीक, अंतरिक्ष, रक्षा और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ छू रहा है। आत्मनिर्भर भारत का संकल्प, महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण विकास, सामाजिक समरसता-ये सभी उसी भावना से जुड़े हैं, जिसकी अभिव्यक्ति वंदे मातरम् में है।

जब भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचता है, जब हमारी बेटियाँ लड़ाकू विमान उड़ाती हैं, जब किसान खेतों में नई तकनीक अपनाते हैं, तब अनायास ही हमारे होठों से निकलता है-वंदे मातरम्।

निष्कर्ष

वंदे मातरम् के 150 वर्ष केवल एक गीत की आयु का उत्सव नहीं, बल्कि उस राष्ट्रीय चेतना का अभिनंदन है जिसने भारत को स्वतंत्रता दिलाई और आज भी हमें राष्ट्रहित के लिए प्रेरित करती है। यह गीत हमें याद दिलाता है कि हमारी मातृभूमि केवल भूमि का टुकड़ा नहीं, बल्कि हमारी पहचान, संस्कृति और अस्तित्व का आधार है।

आज जब हम इस अमर गीत के 150 वर्ष मना रहे हैं, तो यह हमारा दायित्व है कि हम इसके भाव को अपने जीवन में उतारें-राष्ट्रप्रेम, प्रकृति संरक्षण, सामाजिक समरसता और आत्मगौरव के रूप में।

वंदे मातरम्!

मेरे मुल्क के भ्रष्ट मालिक

भ्रष्टाचार मिटाना नहीं किसी एक के बस की बात।
आओ सब मिलकर करें सामूहिक प्रयास।

राज कुमार शाहू
मास्टर तकनीकी सहायक
यूटिलिटीज विभाग

ये मेरे मुल्क के भ्रष्ट मालिकों जवाब दो,
पिछले 75 सालों का हिसाब दो,
आपको क्या पता कहां ग़रीबी की रेखा है,
आपने तो सिर्फ आसमान से भारत को देखा है।

आपने तो कहा था जब हम सत्ता में आएंगे,
एक-एक भ्रष्टाचारी को बिजली के खंभे से लटकाएंगे,
आप तो खंभा ही उखाड़ कर ले गए।
लालच की भूख ने तुमको यहां तक तोड़ा,
कि पशुओं का चारा तक नहीं छोड़ा,
सत्ता सुंदरी इस तरह भाई,
कि भारत की वंदना तुम्हें रास न आई।

आप क्यों अपने को देश भक्तों से तौलते हो,
तभी तो दुश्मनों की भाषा बोलते हो,
ऑपरेशन सिंदूर में कितने विमान गिरे,
हमारा कितना नुकसान हुआ ये पूछते हो,
जो अपनी चमक परायों को रोशनी देती है,
जुगनू की औलाद ऐसे ही होती है।

धन्य हो बाबा साहब अम्बेडकर आप,
हे गरीबों के माइबाप, आपने ये क्या संविधान बनाया,
चपरासी के लिए पढ़ा लिखा और
मंत्री हो सकता है अंगूठा छाप।

प्रतिभावान दर-दर की ठोकरें खाएं,
और संविधान के कातिल देश चलाएं,
कोना कोना देश का अपराधियों से भर गया है,
शास्त्रीजी ही नहीं, पूरे देश का सपना मर गया है।

आप वक्त पे आवाज कहां सुनते हैं,
वो तो हम ही नालायक हैं जो बार बार आपको चुनते हैं।
गरीबों का मरना भी भार है ,
नेताओं का मरना भी जैसे त्यौहार है।

वो मातम क्या जिसमें विस्की और रम नहीं होती,
सच कहें तो आपकी अर्थी भी किसी शादी से कम नहीं होती,
आप तो मरकर भी स्टेच्यू बनकर जिए जाते हैं,
हमे तो कंधे भी किराए पर दिए जाते हैं।

कायरता जिस चेहरे का श्रृंगार करती है,
याद रखना पापियों उस पर मक्खी भी बैठने से इनकार करती है।
ये देश आपके अब्बा की जागीर है, जी भर के खाओ,
मगर एक बात तो बताओ उस दिन कौन सा वकील लाओगे
जिस दिन यमराज के कठघरे में स्वयं को पाओगे,
तब याद आएंगे गुलज़ारी लाल नंदा
जब पड़ेगा गले मे फांसी का फंदा।

तब समझोगे देशद्रोहियों
देशभक्त मर कर भी क्यों अमर होता है।
भगत सिंह और तुम्हारे फंदे में क्या अंतर होता है।

हम आजादी का असली जश्न उसी दिन मनाएंगे
जब आप लाल किले पर नहीं
हमारे दिलों में झंडा फहराएंगे, हमारे दिलों में झंडा फहराएंगे।

प्रश्नकर्ता:
डॉ. बी. बालाजी
प्रबंधक (हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार)

उत्तरदाता:
श्री अरूण कुमार शर्मा
महाप्रबंधक (विपणन)

डॉ. बी. बालाजी:

सबसे पहले, मैं मिधानि परिवार एवं विशेष रूप से हिंदी विभाग की ओर से आपका हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। आपने मिधानि को अपना बहुमूल्य समय दिया, उसके उतार-चढ़ाव के साक्षी रहे और उसकी प्रगति में सहभागी बने। सेवा-निवृत्ति के इस अवसर पर, कृपया अपने जीवन एवं कार्य-यात्रा का संक्षिप्त परिचय दें, ताकि हमारी पत्रिका संकल्प के पाठकों- विशेषकर नई पीढ़ी को आपके बारे में जानने का अवसर मिले।

अरूण कुमार शर्मा:

धन्यवाद। मैंने मिधानि में 2 दिसंबर 1987 को **जीएटी (स्नातक प्रशिक्षु)** के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। जून 1989 में हमें **इंजीनियर ग्रेड** में पुष्टि मिली और मेरी नियुक्ति संयंत्र में हुई।

मेरी कार्य-यात्रा की शुरुआत **बार एंड वायर** मिल से हुई। इसके बाद लगभग छह वर्षों तक **पाउडर मेटलर्जी शॉप**, फिर **सीआरएम** और उसके बाद **मेल्ट शॉप (वीआईएम फर्नेस - 2.5 टन)** में लगभग तीन वर्ष कार्य किया।

इसके पश्चात मेरा स्थानांतरण **वाणिज्य एवं विपणन विभाग** में हुआ। वर्ष 2016 में मुझे **पीपीएम (Production Planning & Monitoring)** विभाग में भेजा गया, जहाँ मैंने लगभग आठ वर्ष कार्य किया। सेवा-काल का अंतिम चरण पुन: **विपणन विभाग** में रहा और वहीं से मैं सेवा-निवृत्त हो रहा हूँ।

मिधानि में मेरा कार्यकाल लगभग 38 वर्ष का रहा जो कई ऊतार-चढ़ाव और अनुभवों से भरपूर रहा। संगठन की टर्नओवर यात्रा-**26 करोड़ रुपये से 1074 करोड़ रुपये** तक-मैंने बहुत निकट से देखी और उसमें सहभागी रहा। मिधानि ने मुझे कार्य-जीवन के सभी 'नवरस' का अनुभव कराया।

डॉ. बी. बालाजी:

आपने हैदराबाद और विशेष रूप से मिधानि को ही क्यों चुना? अपने पारिवारिक और शैक्षणिक पृष्ठभूमि के बारे में भी बताइए।

अरूण कुमार शर्मा:

मैं एक मध्यमवर्गीय परिवार से हूँ। मेरे पिता भारत सरकार के **ऑडिट विभाग** में वरिष्ठ पद पर कार्यरत थे। हम चार भाई-बहन हैं।

मैंने वर्ष 1987 में **आईआईएससी, बेंगलुरु से मेटलर्जी इंजीनियरिंग** में स्नातक किया। उस समय सेल और मिधानि- दोनों में अवसर थे, किंतु मैंने मिधानि को चुना क्योंकि यहाँ **एडवांस मेटलर्जी**-जैसे टाइटेनियम, निकल एलॉय, सुपर एलॉय-का वास्तविक उत्पादन होता था।

साथ ही, हैदराबाद एक उत्कृष्ट शहर है-शिक्षा, चिकित्सा और पारिवारिक जीवन के लिए अत्यंत अनुकूल। यह निर्णय मेरे लिए गर्व का विषय रहा।

डॉ. बी. बालाजी:

क्या कभी आपको लगा कि बेहतर विकास के लिए मिधानि छोड़कर किसी अन्य कंपनी में जाना चाहिए?

अरुण कुमार शर्मा:

ऐसा नहीं है कि अवसर नहीं मिले। मैंने **उस्मानिया विश्वविद्यालय से एमबीए (मार्केटिंग)** भी किया था, जिसके बाद कई प्रस्ताव आए। किंतु एक **मेटलर्जिस्ट** होने के नाते मेरी पहली प्राथमिकता हमेशा मिधानि रही।

मिधानि ने मुझे तकनीकी क्षेत्र के साथ-साथ **मार्केटिंग में भी कार्य करने का अवसर** दिया, जो मेरे करियर का महत्वपूर्ण मोड़ था।

श्री अरूण कुमार शर्मा, महाप्रबंधक (विपणन) की सेवानिवृत्ति पर प्रबंधन द्वारा आयोजित विदाई समारोह की झलकियाँ

प्रबंधन से उपहार स्वरूप रामलला की मूर्ति प्राप्त करते हुए श्री अरूण कुमार शर्मा, महाप्रबंधक (विपणन)

मिधानि के शीर्ष प्रबंधन तथा वरिष्ठ अधिकारियो के साथ श्री अरूण कुमार शर्मा, महाप्रबंधक (विपणन)

मिधानि के सीएमडी डॉ. एसवीएस नारायण मूर्ति से स्मृति चिह्न स्वीकार करते हुए श्री अरूण कुमार शर्मा, महाप्रबंधक (विपणन) और उनकी पत्नी श्रीमती मीनाक्षी शर्मा

मिधानि के सीएमडी डॉ. एसवीएस नारायण मूर्ति, निदेशक (वित्त) श्रीमती के. मधुबाला, निदेशक (उ. एवं वि.) श्री पी. बाबू और महाप्रबंधक श्री एस के द्विवेदी, महाप्रबंधक (एबीडी एवं विपणन) के साथ श्री अरूण कुमार शर्मा, महाप्रबंधक (विपणन)

श्री अरूण कुमार, महाप्रबंधक (विपणन) के परिवार के सदस्य
पत्नी - मीनाक्षी शर्मा, पुत्र - प्रतीक शर्मा
पुत्री - सृष्टि शर्मा, दामाद - सौरभ शर्मा

डॉ. बी. बालाजी :

क्या कोई ऐसी घटना रही जिसने आपके जीवन में प्रेरणादायक मोड़ लाया ?

अरूण कुमार शर्मा :

मिधानि स्वयं एक प्रेरक संगठन है। पाउडर मेटलर्जी शॉप में कार्य करते समय हमने **मॉलीब्डेनम एलॉय** के नए अनुप्रयोग विकसित किए-जैसे हाई टेम्परेचर फर्नेस प्लेट्स।

जब **इन्कैंडेसेंट लैम्प उद्योग** समाप्त होने लगा, तब हमने **मेटलाइजिंग वायर** के रूप में नए बाज़ार खोजे। प्रतियोगिता बढ़ी, तो हमने **वेल्डिंग तकनीक** विकसित कर उत्पादकता बढ़ाई। यही मिधानि की वास्तविक ताकत है-**अनुकूलन और नवाचार**।

डॉ. बी. बालाजी :

मिधानि की सबसे बड़ी ताकत आप किसे मानते हैं ?

अरूण कुमार शर्मा :

मिधानि की सबसे बड़ी ताकत उसका **लचीलापन (Flexibility) है**। उसकी **ग्राहक-केंद्रित उत्पादन प्रणाली है**। स्पेस, डिफेंस, एटॉमिक एनर्जी, एयरोनॉटिक्स-हर रणनीतिक क्षेत्र में मिधानि ने **आत्मनिर्भरता** के सिद्धांत पर कार्य किया।

गर्व की बात है कि **आज तक किसी भी ISRO लॉन्च में मिधानि के मटेरियल के कारण असफलता नहीं हुई**।

डॉ. बी. बालाजी :

मानव संसाधन के दृष्टिकोण से मिधानि को किन क्षेत्रों में सुधार करना चाहिए ?

अरूण कुमार शर्मा :

मिधानि की सबसे बड़ी संपत्ति उसके **कर्मचारी** हैं।

प्रत्येक कर्मचारी का **व्यक्तिगत मूल्यांकन, प्रशिक्षण और फीडबैक** अत्यंत आवश्यक है।

नई पीढ़ी की अपेक्षाएँ अलग हैं-प्रबंधन को अनुकूलनशील होना होगा।

साथ ही, **शॉप फ्लोर स्तर पर जवाबदेही** और **रिजेक्शन विश्लेषण पर विशेष** ध्यान देना चाहिए।

डॉ. बी. बालाजी :

सेवा-निवृत्ति के बाद आपकी क्या योजनाएँ हैं ?

अरूण कुमार शर्मा :

मैं स्वयं को **सक्रिय** रखना चाहता हूँ।

संगीत सीखना, यात्रा करना और समाजसेवा से जुड़ना-ये मेरी प्राथमिकताएँ रहेंगी।

मेरा जीवन मंत्र रहा है-

'स्वस्थ रहो, मस्त रहो, व्यस्त रहो।'

डॉ. बी. बालाजी :

अंत में, मिधानि और हिंदी विभाग के बारे में आपके विचार ?

अरूण कुमार शर्मा :

मिधानि मेरे लिए केवल कार्यस्थल नहीं, बल्कि **पहला घर** रही है।

हिंदी विभाग ने परंपरा और आधुनिकता का सुंदर संतुलन बनाया है।

मेरा सुझाव है कि हिंदी विभाग को **पूर्णकालिक ध्यान** दिया जाए, ताकि राजभाषा के प्रचार-प्रसार को और सशक्त बनाया जा सके।

डॉ. बी. बालाजी :

मिधानि परिवार की ओर से हम आपको स्वस्थ, सुखद और सक्रिय भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ देते हैं। नमस्कार।

ईमानदार नींबू पानीवाला

लक्ष्मी प्रसन्ना
प्रबंधक (आईटी)

प्रिय पाठकों,

आज की इस विशेष कहानी (एकांकी) में हम एक ऐसे विषय को छूते हैं जो हर उम्र, हर पेशे, और हर परिवार से जुड़ा है - ईमानदारी और जिम्मेदारी। छोटे-छोटे फैसले हमारे चरित्र की नींव बनाते हैं। जब एक बच्चा सही रास्ता चुनता है, तो वह केवल उस क्षण का नायक नहीं बनता - वह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मिसाल बन जाता है।

यह कहानी रोहन और अरव की है - दो साधारण बच्चे, जिनका एक साधारण दिन असाधारण बन जाता है, क्योंकि एक बच्चे ने सही वक्त पर अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनी।

'मुनाफ़ा दिखाता है कि हमने कितना पाया -
जिम्मेदारी बताती है कि हम कौन हैं।'

♦ **पृष्ठभूमि - एक उज्जवल सुबह**

मई की एक सुनहरी सुबह। आम के पेड़ों पर बौर आ चुके थे और हवा में मिठास घुली थी। शहर के एक छोटे से मोहल्ले - 'प्रेम नगर कॉलोनी' - में सूरज की पहली किरणें जब घरों की छतों पर उतरीं, तब दो दोस्तों के मन में एक नई उमंग जाग उठी।

रोहन शर्मा - बारह साल का, थोड़ा शांत स्वभाव का, पर भीतर से बहुत सोचने वाला लड़का। उसकी माँ अक्सर कहती थीं, 'रोहन बोलता कम है, पर सोचता बहुत है।' उसे किताबें पढ़ना पसंद था, और वह हर बात में एक सबक ढूंढ लेता था।

अरव वर्मा - रोहन का पड़ोसी और पक्का दोस्त। तेज़-तर्रार, बोलने में माहिर, और हर काम में जोश से भरा हुआ। अरव जो सोचता, तुरंत कह देता। जो कहता, तुरंत करने लगता। दोनों एक-दूसरे के पूरक थे - एक की सोच, दूसरे की गति।

उस शनिवार की शाम, जब दोनों पार्क में बैठे थे और गर्मी से परेशान जॉगर्स को देख रहे थे, अरव के दिमाग में एक विचार कौंधा -

अरव: *'रोहन! देख - इतने लोग दौड़ रहे हैं और इतनी गर्मी है। अगर हम यहाँ नींबू पानी बेचें, तो? मज़ा भी आएगा और पैसे भी मिलेंगे!'*

रोहन ने एक पल सोचा, फिर मुस्कुरा दिया।

रोहन: *'ठीक है - पर ठीक से करेंगे। हिसाब-किताब साफ, दाम तय, और ग्राहक से सच बोलेंगे।'*

अगले दिन रविवार था। सुबह नौ बजे ही दोनों दोस्त बाज़ार पहुँच गए। रोहन के पास एक छोटी-सी नोटबुक थी जिसमें उसने सारा हिसाब लिखा था -

नींबू - ₹40, चीनी - ₹20, नमक और काला नमक - ₹10, कप और स्ट्रॉ - ₹30, बर्फ़ - ₹20। कुल लागत - ₹120।

'अगर हम एक गिलास ₹10 में बेचें और पचास गिलास बिकें,' रोहन ने हिसाब लगाया, 'तो ₹500 आएँगे और ₹380 का शुद्ध मुनाफ़ा।'

अरव ने खुशी से हाथ मिलाया और बोला -

अरव: *'भाई, हम तो उद्यमी बन जाएँगे! स्कूल में बताएँगे कि हमने खुद का बिज़नेस चलाया!'*

रोहन के पिताजी ने एक पुरानी लकड़ी की मेज दी। माँ ने एक सुंदर-सी पट्टी पर लिखा - 'ताज़ा नींबू पानी - ₹10' और दोपहर बारह बजे, पार्क के मुख्य द्वार के पास, दोनों की छोटी-सी दुकान सज गई।

♦ ***दृश्य 1 - पार्क में नींबू पानी की दुकान***

पहला ग्राहक आया - एक बुजुर्ग सज्जन, जो सुबह की सैर पर निकले थे। उन्होंने एक घूँट लिया और आँखें बंद कर लीं।

बुजुर्ग सज्जन: 'बेटा, यह तो वाकई लाजवाब है! बिल्कुल घर जैसा स्वाद। शाबाश!'

इसके बाद तो जैसे जादू हो गया। एक के बाद एक लोग आते गए। बच्चे, जॉगर, माँएँ, दफ़्तर जाने वाले - सभी ने रोहन और अरव की तारीफ़ की। शाम होते-होते जग का जग नींबू पानी बिक चुका था।

अरव ने ऊँची आवाज़ में घोषणा की -

अरव: *'आज हमने इतिहास रच दिया! सब कुछ बिक गया, एक भी गिलास नहीं बचा!'*

♦ ***दृश्य 2***

शाम ढलते-ढलते दोनों ने मेज समेटी और पास के बेंच पर बैठकर पैसे गिनने लगे। नोट थे, सिक्के थे - और गिनती जब पूरी हुई तो दोनों की आँखें फटी की फटी रह गईं।

₹620!

रोहन ने फिर गिने। फिर। तीन बार। हर बार वही आंकड़ा।

अरव: *'यार! ₹620? हमने तो ₹500 का अनुमान लगाया था! इतना ज़्यादा कैसे? शायद कुछ लोगों ने टिप दी हो! हम तो सच में नंबर-वन व्यापारी हैं!'*

अरव ने पैसे हवा में उछाले और खुशी से नाचने लगा। लेकिन रोहन चुप बैठा रहा। उसकी आँखें पैसों पर नहीं, दूर - कहीं शून्य में - टिकी थीं।

उसके दिमाग में एक दृश्य बार-बार कौंध रहा था।

दोपहर की भीड़ में एक पल - जब श्री मेहता आए थे। वे उनके दोस्त के पिता थे - एक सज्जन, मृदुभाषी इंसान। उन्होंने एक गिलास नींबू पानी लिया था और ₹500 का नोट दिया था।

श्री मेहता: *'बेटा, ₹450 वापस करना।'*

उस वक्त पाँच-छह लोग एक साथ आ गए थे। अरव जूस बना रहा था, रोहन कप दे रहा था। किसी ने ध्यान नहीं दिया। ₹450 वापस नहीं हुए।

रोहन ने धीरे से हिसाब लगाया - ₹500 आए, ₹10 का नींबू पानी गया, बाकी ₹490... नहीं - ₹450 वापस होने चाहिए थे। वे नहीं हुए।

₹620 - ₹500 (जो होने चाहिए थे) = ₹120 ज़्यादा। लेकिन मेहता जी का ₹450?

रोहन ने फिर गिना। पूरा हिसाब मिलाया। सच सामने था -

₹450 - श्री मेहता के - उनके पैसों के डिब्बे में थे।

रोहन का दिल एक पल के लिए जैसे रुक गया।

♦ *दृश्य 3*

रोहन ने अरव को रोका।

रोहन: *'अरव, रुक। यह पैसे हमारे नहीं हैं।'*

अरव हँसते-हँसते रुक गया।

अरव: *'क्या? भाई, हमने पूरे दिन मेहनत की है! धूप में खड़े रहे, नींबू निचोड़े, पानी डाला - यह पैसे तो हमारे ही हैं!'*

रोहन: *'मेहता जी ने ₹500 दिए थे। उनका ₹450 वापस होना था। हम भूल गए। वो पैसे अभी भी उन्हीं के हैं।'*

अरव का चेहरा एक पल के लिए बदला। फिर उसने कंधे उचकाए।

अरव: *'यार, उन्हें याद भी नहीं होगा। देख - वो इतने अमीर हैं। ₹450 से उनका क्या फ़र्क पड़ेगा? हम दोनों तो यह पैसे बड़े काम में लगाएँगे - किताबें खरीदेंगे, अगली दुकान के लिए बचाएँगे।'*

रोहन ने अरव की बात ध्यान से सुनी। फिर धीरे से बोला -

रोहन: *'अरव, यहाँ सवाल यह नहीं है कि उन्हें याद रहेगा या नहीं। यह सवाल यह है कि मुझे याद है। और मैं जानता हूँ कि यह पैसे उनके हैं।'*

अरव ने एक आख़िरी दलील दी -

अरव: *'पर हमने तो गलती से किया। जानबूझकर नहीं!'*

रोहन: *'गलती हुई - यह सच है। पर गलती को सुधारना हमारे हाथ में है। अगर हम यह पैसे रख लेते हैं, तो अब यह गलती नहीं - यह चोरी होगी।'* -

कमरे में एक लंबी चुप्पी छा गई।

अरव ने रोहन की आँखों में देखा। वहाँ कोई गुस्सा नहीं था, कोई उपदेश नहीं - बस एक शांत, अटल सच्चाई थी।

रोहन ने ₹450 उठाए, अपनी जेब में रखे, और उठ खड़ा हुआ।

रोहन: *'मैं अभी मेहता जी के घर जाता हूँ। तू आएगा?'*

अरव एक पल रुका। फिर चुपचाप उठ गया।

अरव (धीरे से): *'हाँ... चलते हैं।'*

'ईमानदारी वह नहीं जो हम दिखावे के लिए करते हैं - ईमानदारी वह है जो हम तब करते हैं जब कोई नहीं देखता।'

♦ *दृश्य 4*

मेहता जी का घर पार्क से कुछ ही दूर था। जब दोनों वहाँ पहुँचे, शाम की अज़ान हो रही थी और आसमान में हल्की–सी लाली फैल रही थी।

रोहन ने दरवाज़े की घंटी बजाई। कुछ देर बाद मेहता जी खुद दरवाज़े पर आए - हाथ में चाय का कप, मुँह पर एक शांत मुस्कान।

श्री मेहता: *'अरे, रोहन बेटा! और अरव भी! आओ, क्या हुआ?'*

रोहन ने सीधे उनकी आँखों में देखा।

रोहन: *'मेहता जी, आपने आज हमसे नींबू पानी लिया था और ₹500 दिए थे। हमें ₹450 वापस करने थे - हम भूल गए। यह लीजिए।'*

रोहन ने ₹450 आगे बढ़ा दिए।

मेहता जी कुछ पल के लिए स्थिर हो गए। फिर उन्होंने पैसे लेने से पहले रोहन के चेहरे को गौर से देखा - उस निश्छल, सीधे चेहरे को जिसमें कोई लालच नहीं था, कोई डर नहीं था - बस

एक सच्चाई थी।

उनकी आँखें भर आईं।

श्री मेहता (भरे गले से): *'रोहन बेटा... मुझे सच में याद नहीं था। लेकिन तुम्हें याद रहा - और तुम आए। यह छोटी-सी बात नहीं है, बेटा। आज के ज़माने में यह बहुत बड़ी बात है।'*

उन्होंने रोहन के सिर पर हाथ रखा।

श्री मेहता: *'तुम्हारी ईमानदारी उन ₹450 से कहीं ज़्यादा कीमती है। इसे हमेशा बचाए रखना - यह दौलत कोई छीन नहीं सकता।'*

अरव चुपचाप खड़ा सुन रहा था। उसकी आँखों में एक अजीब सी नमी थी।

♦ *दृश्य 5*

♦ वापसी - और एक नई समझ

जब दोनों वापस पार्क के बेंच पर आए, रात उतर आई थी। झींगुर बोल रहे थे, दूर कोई गाना बज रहा था, और आसमान में तारे एक–एक करके निकल रहे थे।

रोहन ने पैसों की थैली खोली। अब उसमें ₹170 थे - उनका असली मुनाफ़ा।

अरव ने धीरे से कहा -

अरव: *'₹170... ₹620 नहीं।'*

रोहन: *'हाँ। पर यह ₹170 सोने जैसे हैं।'*

अरव कुछ देर चुप रहा। फिर उसने पूछा -

अरव: *'रोहन, तुझे डर नहीं लगा? मेहता जी ने क्या सोचा होगा - कि हम चोर हैं?'*

रोहन: *'मुझे डर लगा। पर उससे ज़्यादा डर यह था कि अगर मैंने यह पैसे रख लिए, तो मैं खुद अपनी नज़रों में गिर जाता। और वो डर... वो बहुत बड़ा था।'*

अरव ने लंबी साँस ली।

अरव: *'यार, मुझे माफ़ कर। मैंने गलत सोचा था। तूने सही कहा था - वो पैसे हमारे नहीं थे।'*

रोहन: *'तू माफ़ी मत माँग। तूने एक सवाल उठाया जो बहुत से लोग पूछते हैं - 'फर्क क्या पड़ता है, किसी को पता नहीं चलेगा।' पर फ़र्क पड़ता है। अपने आप को पता चलता है।'*

अरव ने रोहन की तरफ देखा - एक लंबी, गहरी नज़र से। फिर बोला -

अरव: *'जानता है? पैसे मिले होते तो खुशी होती। पर अभी जो अच्छा लग रहा है - वो कुछ और है। वो... शांति है।'*

रोहन मुस्कुरा दिया।

रोहन: *'हाँ। यही असली मुनाफ़ा है।'*

'जो काम करते समय मन में शांति हो - वही काम सच्चा है।'

उपसंहार - अगली सुबह

अगले हफ़्ते जब रोहन स्कूल गया, तो प्रिंसिपल मैडम ने असेंबली में उसे बुलाया। किसी ने उन्हें बता दिया था।

'रोहन ने कल कुछ ऐसा किया जो हम सभी को सीखना चाहिए,' उन्होंने कहा। 'उसने ₹450 वापस किए - वो पैसे जो आसानी से रखे जा सकते थे, जिसके लिए कोई उसे दोषी नहीं ठहराता। लेकिन उसने किया - क्योंकि यही सही था।'

पूरी असेंबली ने तालियाँ बजाईं।

अरव, पीछे की लाइन में खड़ा था। उसने ताली बजाई -और इस बार सबसे ज़ोर से।

जीवन के सबक - इस कहानी से

♦ ईमानदारी - सबसे बड़ी दौलत

रोहन के पास ₹450 रखने का पूरा अवसर था। कोई नहीं जानता था। लेकिन ईमानदारी का अर्थ है - वह सही काम करना जब कोई नहीं देख रहा। यही वह दौलत है जो न कोई चुरा सकता है, न समय उसे घटा सकता है।

♦ जिम्मेदारी - खुद से जवाबदेही

गलती किसी से भी हो सकती है - भीड़ में, जल्दी में, व्यस्तता में। पर जब गलती का एहसास हो जाए, तो उसे सुधारना जिम्मेदारी है। रोहन ने यही किया - उसने गलती को स्वीकारा और सुधारा।

♦ मुनाफ़ा और नैतिकता - साथ-साथ चलें

व्यापार में मुनाफ़ा ज़रूरी है, पर नैतिकता उससे भी ज़रूरी है। जो मुनाफ़ा किसी और के नुकसान पर बना हो - वह मुनाफ़ा नहीं, बोझ है। सच्ची सफलता वही है जो ईमानदारी के साथ आए।

♦ मन की शांति - सबसे बड़ा पुरस्कार

जब रोहन ₹450 वापस करके लौटा, उसके पास पैसे कम थे - पर मन में शांति थी। यही वह अनुभव है जो हमें बताता है कि हम सही रास्ते पर हैं। मन की शांति किसी बाज़ार में नहीं बिकती।

'मुनाफ़ा बाँटने से व्यवस्था मज़बूत होती है - जिम्मेदारी बाँटने से वह टिकाऊ बनती है।'

मेरे लिए, सीए बनना सिर्फ एक डिग्री नहीं थी

सीए शिवम कुमार गौर
सहायक प्रबंधक (वि. एवं ले.)

जीवन में कुछ पल ऐसे होते हैं, जो केवल याद नहीं रहते - वे भीतर जलते रहते हैं, हमें गढ़ते हैं, हमें पहचान देते हैं। मेरे जीवन में ऐसा ही एक पल है - *चार्टर्ड अकाउंटेंट (CA) बनने का सफर*, जो केवल एक उपलब्धि नहीं, बल्कि एक लंबी, कठिन और कभी-कभी टूट जाने वाली यात्रा थी।

मुझे आज भी वह दिन याद है, जब पहली बार मेरे मन में यह सपना जन्मा। उस समय मेरे भीतर ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के शब्द गूंजे-

'सपने वो नहीं होते जो हम सोते वक्त देखते हैं,
सपने वो होते हैं जो हमें सोने नहीं देते।'

और सच कहूँ, उस दिन के बाद मेरी नींद जैसे कहीं खो गई थी।

मैं, *शिवम गौर*, एक साधारण परिवार से था - जहाँ सपने भी साधारण ही देखे जाते थे। घर में किसी का भी कॉमर्स से कोई लेना–देना नहीं था। 'CA' शब्द भी मेरे लिए उतना ही अनजाना था, जितना किसी अजनबी शहर का रास्ता। लेकिन शायद कुछ सपने हमें चुनते हैं।

मैंने जब इस रास्ते पर कदम रखा, तो ऐसा लगा जैसे मैं एक अंधेरी सुरंग में प्रवेश कर रहा हूँ - जहाँ न कोई रास्ता दिख रहा था, न कोई हाथ पकड़ने वाला। किताबें थीं, मोटी-मोटी, जटिल और कभी-कभी डराने वाली। हर पन्ना जैसे एक नई चुनौती लेकर सामने खड़ा हो जाता।

दिन-रात का फर्क मिट गया था। घड़ी की सुइयाँ चलती रहतीं, लेकिन मेरे लिए समय ठहर गया था। बाहर दुनिया त्योहार मना रही होती और मैं अपने कमरे में बैलेंस शीट के अंकों से जूझ रहा होता। कभी-कभी रात इतनी भारी हो जाती कि किताबों के अक्षर धुंधले पड़ जाते। आँखें नम हो जातीं, और मन कहता - *'बस... अब और नहीं।'* और सच कहूँ, कई बार मैं हार भी गया।

रिजल्ट स्क्रीन पर 'FAIL' लिखा देखना -
वह केवल एक शब्द नहीं था,
वह एक झटका था...
एक ऐसा झटका, जो भीतर तक तोड़ देता था।

ऐसे ही एक रात, जब सब कुछ खत्म सा लग रहा था, मैं चुपचाप खिड़की के पास खड़ा था। बाहर सन्नाटा था, और अंदर तूफान। तभी अचानक मन में दुष्यंत कुमार की पंक्तियाँ गूंज उठीं-

'कौन कहता है कि आसमाँ में सुराख़ नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।'

उस पल लगा जैसे किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर कहा हो - *'लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है।'* मैंने आँसू पोंछे, किताब उठाई, और फिर से शुरू किया। उसके बाद हर असफलता मेरे लिए अंत नहीं, एक नया आरंभ बन गई। मैं गिरता... संभलता... और फिर दौड़ पड़ता।

यह सफर अब सिर्फ एक डिग्री पाने का नहीं रहा था। यह मेरे आत्मसम्मान की लड़ाई बन चुका था। और फिर... वह दिन आया... रिजल्ट का दिन। हाथ काँप रहे थे। दिल जैसे सीने से बाहर आना चाहता था। मैंने स्क्रीन पर नजर डाला...

'PASS'

बस... एक शब्द।

लेकिन उस एक शब्द में मेरी अनगिनत रातें, टूटे हुए हौसले और फिर से खड़े होने की जिद। सब कुछ समा गया था। मैं कुछ पल तक स्क्रीन को देखता ही रह गया। फिर अचानक आँखों से आँसू बहने लगे। लेकिन इस बार ये आँसू हार के नहीं, जीत के थे। मैंने धीरे से कहा- *'शिवम, तू कर गया...'*

उस दिन मुझे एहसास हुआ कि मेरा नाम 'शिवम' और उपनाम 'गौर' भले ही मुझे विरासत में मिले हों, लेकिन ये दो अक्षर - 'CA' - मैंने अपनी हर साँस, हर आँसू और हर संघर्ष से कमाए हैं। आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो वह कमरा, वह टेबल, वह रातें - सब मुझे पुकारती हैं। वे कहती हैं - *'यही वह जगह है, जहाँ तुम टूटे भी थे... और यहीं तुम बने भी थे।'*

यह संस्मरण केवल मेरी कहानी नहीं है। यह हर उस व्यक्ति की कहानी है, जो एक बड़े सपने के लिए खुद से लड़ रहा है। क्योंकि सच यही है- CA बनना आसान नहीं होता। यह एक परीक्षा नहीं, एक तपस्या है। और अंत में, मैं बस इतना कहना चाहूँगा- अगर आपके भीतर कोई सपना है, जो आपको चैन से सोने नहीं देता... तो उसे छोड़िए मत। क्योंकि, वही सपना, एक दिन आपकी पहचान बनता है।

उन्नत एयरो इंजन सामग्रियों के लिए उड़ानयोग्यता प्रमाण पत्र

मिधानि ने उन्नत एयरो इंजनों के लिए महत्वपूर्ण सुपरअलॉय, टाइटेनियम अलॉय और विशेष स्टील्स के स्वदेशी विकास और एयरवर्थनेस सर्टिफिकेशन में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है।

इस अवसर पर सेंटर फॉर मिलिट्री एयरवर्थनेस एंड सर्टिफिकेशन (सेमिलैक) के मुख्य कार्यकारी श्री एपीवीएस प्रसाद ने मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एसवीएस नारायण मूर्ति को एयरवर्थनेस सर्टिफिकेट प्रदान किया, जिसके साथ ही एयरो इंजन अनुप्रयोगों के लिए इन सामग्रियों के सीरीज उत्पादन की मंजूरी मिल गई। इस कार्यक्रम में मिधानि की निदेशक (वित्त) श्रीमती के. मधुबाला सहित मिधानि तथा सेमिलैक के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। यह उपलब्धि उन्नत एयरो इंजन सामग्रियों के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को मजबूत करने में मिधानि की भूमिका को और पुष्ट करती है।

अयोध्या श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के लिए भारत की पहली टाइटेनियम स्थापत्य संरचना

मिधानि द्वारा अयोध्या श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह योगदान मंदिर परिसर के प्रदक्षिणा गलियारे के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन की गई टाइटेनियम खिड़कियों (कुल 31 नग) का निर्माण और आपूर्ति करके किया गया है। हालाँकि, मिधानि पिछले चार दशकों से रणनीतिक उपयोगों के लिए टाइटेनियम मिश्र धातुओं की आपूर्ति कर रहा है, लेकिन यह पहली बार है जब इसका उपयोग किसी अवसंरचना के निर्माण कार्य में किया गया हो। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के साथ, मिधानि भारत की पहली ऐसी कंपनी बन गई है जिसने किसी प्रमुख विरासत स्मारक में टाइटेनियम का उपयोग एक संरचनात्मक और वास्तुशिल्प सामग्री के रूप में किया है।

इस कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को संकल्प संपादक मंडल शुभकामनाएँ प्रेषित करता है।

स्पेशालिटि स्टील - वर्ज़न 1.2 के देशीकृत विनिर्माण के लिए महत्पूर्ण पहल

मिधानि ने भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के साथ, स्पेशलिटी स्टील – वर्ज़न 1.2 के लिए 'उत्पादन–आधारित प्रोत्साहन' (पीएलआई) योजना के तहत एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। यह उपलब्धि उच्च–मूल्य वाले स्पेशलिटी स्टील के स्वदेशीकरण, घरेलू विनिर्माण क्षमताओं को मजबूत करने और 'आत्मनिर्भर भारत' के विज़न को समर्थन देने के प्रति मिधानि की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। पीएलआई योजना नवाचार को बढ़ावा देगी, स्पेशलिटी स्टील के घरेलू उत्पादन में वृद्धि करेगी और भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनाने के विज़न में योगदान देगी। मिधानि की ओर से श्री वी. अरुण कुमार, उप महाप्रबंधक (विपणन) ने समझौता ज्ञापन के दस्तावेज भारत सरकार के **केंद्रीय इस्पात मंत्री श्री एच. डी. कुमारस्वामी** के करकमलों से प्राप्त किए।

राष्ट्रीय रक्षा उद्योग सम्मेलन (एनडीआईसी) में प्रतिभागिता

मिधानि ने 19–20 मार्च 2026 तक नई दिल्ली में स्थित मानेकशॉ सेंटर में आयोजित राष्ट्रीय रक्षा उद्योग सम्मेलन (एनडीआईसी) में एक प्रदर्शक के रूप में भाग लिया। यह आयोजन 'उन्नत विनिर्माण प्रौद्योगिकियां' विषय पर केंद्रित रहा, जिससे रक्षा और विनिर्माण क्षेत्रों के प्रमुख हितधारकों को एक साझा मंच प्राप्त हुआ। इस अवसर पर माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने मिधानि के स्टाल पर मिधानि के उत्पादों की जानकारी हासिल की।

स्ट्रिप पॉलिशिंग मशीन का उद्घाटन

मिधानि ने अपने कोल्ड रोलिंग मिल्स में एक अत्याधुनिक स्ट्रिप पॉलिशिंग मशीन का सफलतापूर्वक उद्घाटन किया है। इस सुविधा का उद्घाटन मिधानि के सीएमडी डॉ. एसवीएस नारायण मूर्ति ने श्रीमती के. मधुबाला, निदेशक (वित्त), श्री पी. बाबू, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में किया। यह उन्नत मशीन एयरोस्पेस, मिसाइल और अंतरिक्ष क्षेत्रों की विशेष और महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन की गई है। यह एक समान सतह फिनिश और बेहतर समतलता के साथ उच्च-सटीकता वाली स्ट्रिप प्रोसेसिंग को संभव बनाती है, जो रणनीतिक अनुप्रयोगों के कड़े गुणवत्ता मानकों को पूरा करती है। इस सुविधा की स्थापना से मिधानि की बेहतरीन गुणवत्ता वाली विशेष स्टील स्ट्रिप्स की आपूर्ति करने की क्षमता में काफी वृद्धि हुई और यह उन्नत सामग्री तथा सटीक विनिर्माण के माध्यम से राष्ट्रीय कार्यक्रमों को सहयोग देने की उसकी प्रतिबद्धता को और मजबूत करती है।

अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के एमएसएमई के लिए विशेष विक्रेता सम्मेलन

मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि) ने नेशनल एससी–एसटी मिधानि हब (एनएसएसएच), हैदराबाद के सहयोग से एक विशेष वेंडर विकास कार्यक्रम आयोजित किया। इसके ज़रिए कंपनी ने रक्षा निर्माण क्षेत्र में समावेशी और टिकाऊ औद्योगिक विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को फिर से दोहराया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य मिधानि की सप्लाई चेन में एससी/एसटी उद्यमियों और पेशेवरों की भागीदारी को मज़बूत करना था। साथ ही, इसका मकसद पारदर्शिता, वेंडर रजिस्ट्रेशन में आसानी और खरीद प्रक्रियाओं के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना भी था। अवसर पर प्रतिभागियों को मिधानि की खरीद प्रक्रियाओं, वेंडर रजिस्ट्रेशन के तरीकों, अनुपालन संबंधी ज़रूरतों और एमएसएमई के लिए उपलब्ध अवसरों के बारे में जानकारी दी गई। पेशेवरों के लिए वित्तीय सुविधा और नकदी सहायता को बेहतर बनाने के लिए 'ट्रेड रिसीवेबल्स डिस्काउंटिंग सिस्टम' (TReDS) पर एक विशेष सत्र भी आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में श्री पी. बाबू, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) और श्रीमती स्फूर्ति रेड्डी, आईआरएस, मुख्य सतर्कता अधिकारी, मिधानि सहित श्री एस. सुरेश, एनएसएसएचओ प्रमुख (तेलंगाना और आंध्र प्रदेश); श्री शुभदीप घोष, अ.म.प्र. (प्रभारी, खरीद), श्री वी. सुरेश बाबू, ज़ोनल महाप्रबंधक (एनएसएसएचओ) उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया।

पोश (POSH) अधिनियम, 2013 पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम

मिधानि ने सभी अनियत महिला कर्मचारियों के लिए यौन उत्पीड़न रोकथाम (पोश) अधिनियम, 2013 पर एक जागरूकता सत्र आयोजित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से मिधानि ने कानूनी नियमों का पालन करने और महिलाओं के लिए एक सुरक्षित, समावेशी कार्यस्थल उपलब्ध कराने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य अधिनियम के तहत अधिकारों, ज़िम्मेदारियों और शिकायत निवारण तंत्र के बारे में जागरूकता पैदा करना था, साथ ही कार्यस्थल पर गरिमा और सम्मान को बढ़ावा देना था। इस कार्यक्रम का संचालन हैदराबाद सिक्योरिटी काउंसिल-वीमेन फोरम की पोश जागरूकता प्रशिक्षक, सुश्री सुप्रिया सुनील कुमार ने किया। उन्होंने प्रतिभागियों को इस कानून के मुख्य प्रावधानों के बारे में जानकारी दी और एक खुला व सहयोगी कार्य वातावरण बनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर श्री एम. पी. रमेश, अपर महाप्रबंधक (मा.संसा.) (सुरक्षा, ईएमएस और टी & डी के (प्रभारी), और सुश्री एम. बी. इंदु, उप महाप्रबंधक (पीएमओ और सिविल) तथा पोश अधिनियम, 2013 के तहत गठित आंतरिक समिति की अध्यक्षा उपस्थित थीं।

इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 में प्रतिभागिता

मिधानि ने नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित 'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026' (19-20 फरवरी 2026) में भाग लिया। संगठन ने अपनी एआई-आधारित मिश्र धातु विकास परियोजना को प्रदर्शित किया, जो मिश्र धातुओं की संरचना और सूक्ष्म-संरचना से संबंधित ऐतिहासिक प्रयोगशाला डेटा का उपयोग करके उनके यांत्रिक गुणों का पूर्वानुमान लगाती है। अवसर पर उद्यम की प्रबंधक (आईटी) श्रीमती के. लक्ष्मी प्रसन्ना और श्री के. रामरेड्डी, उप प्रबंधक (मेल्ट) ने समिट के दर्शकों को मिधानि की परियोजनाओं की जानकारी दी।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2025 का आयोजन

केंद्रीय सतर्कता आयोग के दिशानिर्देशों का अनुपालन करते हुए मिधानि में 27 अक्टूबर से 02 नवंबर 2025 तक 'सतर्कता: हमारी साझा जिम्मेदारी' विषय पर 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2025' मनाया गया। सप्ताह की शुरुआत मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एसवीएस नारायण मूर्ति द्वारा 'सत्यनिष्ठा की शपथ' दिलाने के साथ हुई। इस अवसर पर निदेशक (वित्त) श्रीमती के. मधुबाला, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) श्री पी बाबू और मुख्य सतर्कता अधिकारी श्रीमती स्फूर्ति रेड्डी, आईआरएस ने अपनी उपस्थित दर्ज की। कार्यक्रम के दौरान, अनुशासनात्मक कार्यवाही संचालित करने के लिए एक ई-प्लेटफ़ॉर्म भी लॉन्च किया गया। इस सप्ताह के दौरान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, वेंडर मीट, ग्राहक शिकायत निवारण सत्र, वॉकथॉन, ग्रामीण संपर्क अभियान और छात्रों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसी कई गतिविधियाँ आयोजित की गईं।

03 नवंबर 2025 को सप्ताह का समापन समारोह आयोजित किया गया। समापन कार्यक्रम में श्री वी.वी. लक्ष्मीनारायण, आईपीएस (सेवानिवृत्त), पूर्व संयुक्त निदेशक, सीबीआई ने मुख्य अतिथि के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करके कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। अवसर पर सतर्कता विभाग की गृह पत्रिका 'जागृति' का विमोचन किया गया और सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

गुणवत्ता माह का आयोजन

मिधानि ने गुणवत्ता माह के अवसर पर नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र (एनएफसी) के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक, डॉ. कोमल कपूर का विशेष अतिथि व्याख्यान आयोजित किया। उन्होंने कर्मचारियों को गुणवत्ता संवर्द्धन, उन्नत विधियों और आधुनिक निरीक्षण प्रथाओं के महत्वपूर्ण पहलुओं पर संबोधित किया। कार्यक्रम में मिधानि के सीएमडी डॉ. एसवीएस नारायण मूर्ति तथा श्री पी. बाबू, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) सहित मिधानि के अधिकारीगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम के दौरान, मिधानि ने अपने पूर्व गुणवत्ता विभाग प्रमुखों, श्री पी. एन. मोहंती और श्री एन. वी. एस. रामगोपाल का सम्मान किया, जिन्होंने मिधानि में गुणवत्ता सुविधाओं के उन्नयन और विभाग को नई ऊंचाइयों तक ले जाने में उत्कृष्ट योगदान दिया था।

स्वच्छता पखवाड़ा-2025 का आयोजन

रक्षा उत्पादन विभाग (DDP), रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी दिशानिर्देशों का अनुपालन करते हुए मिधानि में 01 दिसंबर से 15 दिसंबर 2025 तक 'स्वच्छता पखवाड़ा–2025' मनाया गया। इस अभियान में मिधानि संयंत्र, निगम कार्यालय, एएमटीएल के कर्मचारी और आवास परिसर के निवासियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। 'स्वच्छता पखवाड़ा-2025, का मुख्य उद्देश्य स्वच्छता, साफ-सफाई, पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना और प्लास्टिक के उपयोग को कम करना था। स्वच्छता पखवाड़ा-2025 का समापन समारोह श्रीमती के. मधुबाला, निदेशक (वित्त) की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। अपने संबोधन में उन्होंने पर्यावरण प्रबंधन सेवाएँ (ईएमएस) विभाग द्वारा पखवाड़े के दौरान किए गए स्वच्छता कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि स्वच्छता केवल पखवाड़े तक सीमित न रहकर वर्ष भर अपनाई जानी चाहिए। सतर्कता एवं सुरक्षा की तरह ही स्वच्छता भी प्रत्येक कर्मचारी की सामूहिक जिम्मेदारी है, न कि किसी एक विभाग या व्यक्ति की। इस अवसर पर श्री एम. पी. रमेश, अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन) (प्रभारी - सुरक्षा, ईएमएस एवं टी एंड डी); लेफ्टिनेंट कर्नल एन. शेषगिरी राव, उप महाप्रबंधक (सुरक्षा, ईएमएस एवं टी एंड डी); श्री रामचंद्र बेहरा, प्रबंधक (ईएमएस); श्रीमती नीना साहा, शिक्षिका, बीपीडीएवी विद्यालय; छात्र, प्रशिक्षु तथा ईएमएस विभाग के कर्मचारी उपस्थित रहे। समापन कार्यक्रम में सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए बीपीडीएवी विद्यालय में कर्मचारियों के बच्चों के लिए आयोजित चित्रकला एवं निबंध लेखन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

77वें गणतंत्र दिवस 2026 का आयोजन

मिधानि ने 77वां गणतंत्र दिवस देशभक्तिपूर्ण उत्साह के साथ मनाया। निदेशक (वित्त) श्रीमती के. मधुबाला ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया, जिसके बाद राष्ट्रगान हुआ और सीआईएसएफ द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। सभा को संबोधित करते हुए, निदेशक (वित्त) श्रीमती के. मधुबाला ने गणतंत्र दिवस के महत्व और 'वंदे मातरम के 150 वर्ष' विषय पर प्रकाश डाला और कर्मचारियों से संगठनात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पूरी निष्ठा के साथ काम करने का आग्रह किया। बीपीडीएवी स्कूल के छात्रों द्वारा दी गई सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने समारोह में और भी रंग भर दिया। 25 और 15 वर्ष की सेवा पूरी करने वाले कर्मचारियों, सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों और कर्मचारियों के मेधावी बच्चों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' के साथ हुआ।

मिधानि ने 30 जनवरी को 'शहीद दिवस' मनाया और उन वीर शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। अवसर पर महात्मा गांधी को भी याद किया गया, जिनके सत्य और अहिंसा के आदर्श आज भी राष्ट्र को प्रेरित करते हैं।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

मिधानि में महिलाओं के उल्लेखनीय योगदान की सराहना करते हुए अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उद्यम के शीर्ष प्रबंधन ने प्रयोगशालाओं, बोर्डरूम और उत्पादन स्थलों पर महिलाओं के समर्पण और उनके द्वारा अपने-अपने कार्यक्षेत्र में

किए जा रहे निरंतर नवाचार की न केवल प्रशंसा की बल्कि उन्हें बढ़ावा देते हुए उनकी क्षमताओं को रेखांकित किया। 'आत्मनिर्भर भारत' की दिशा में संगठन की यात्रा को मज़बूत करने में महिलाओं के योगदान को याद किया गया। अवसर पर उद्यम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एस.वी.एस. नारायण मूर्ति, निदेशक (वित्त) श्रीमती के. मधुबाला और निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) श्री पी. बाबू, तथा महिला कर्मचारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की।

सीआईएसएफ का 57वां स्थापना दिवस

मिधानि स्थित सीआईएसएफ यूनिट ने 10 मार्च 2026 को एक औपचारिक परेड के साथ अपना 57वां स्थापना दिवस मनाया। कार्यक्रम के दौरान श्री राधे श्याम रोठौड़, सहायक कमाण्डेन्ट सीआईएसएफ यूनिट, मिधानि ने सीआईएसएफ की कार्यकलापों की जानकारी दी। मिधानि के सीएमडी डॉ. एस. वी. एस. नारायण मूर्ति ने मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर की शोभा बढ़ाई। इस कार्यक्रम में श्रीमती के. मधुबाला, निदेशक (वित्त), श्री पी. बाबू, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) और मिधानि की सीवीओ श्रीमती स्फूर्ति रेड्डी और वरिष्ठ अधिकारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की।

इस अवसर पर मिधानि के प्रबंधन ने भारत के महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की सुरक्षा में सीआईएसएफ कर्मियों के समर्पण और सेवा की प्रशंसा की।

सुरक्षा जागरूकता सप्ताह

मिधानि में सुरक्षा जागरूकता को बढ़ावा देने और सुरक्षित कार्य पद्धतियों को प्रोत्साहित करने के लिए 'राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह' 4 से 10 मार्च 2026 तक मनाया गया। इस वर्ष की थीम, 'सुरक्षा बढ़ाने के लिए लोगों को जोड़ें, शिक्षित करें और सशक्त बनाएं,' एक सुरक्षित कार्यस्थल के निर्माण में सामूहिक जिम्मेदारी और सक्रिय भागीदारी के महत्व को रेखांकित करती है।

सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों में नेतृत्व एवं सुशासन

अरिंदम मंडल
वरिष्ठ प्रबंधक (सतर्कता)

प्रस्तावना

सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम (पीएसयू) किसी भी देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, क्योंकि उनकी सेवाएँ नागरिकों सहित समाज के कल्याण के लिए होती हैं और वे अन्य संस्थाओं एवं व्यवसायों को भी सहयोग प्रदान करते हैं। ये संस्थाएँ निजी क्षेत्र के संगठनों से काफी भिन्न तरीके से कार्य करती हैं। निजी फर्में उद्यमियों या शेयरधारकों के स्वामित्व में होती हैं, जबकि सार्वजनिक एजेंसियाँ अधिकांशत: सरकार के स्वामित्व में होती हैं। निजी और सार्वजनिक संगठन अपने वित्तपोषण के स्रोतों में भी भिन्न होते हैं और सार्वजनिक संगठन केवल बाज़ार की ताकतों के बजाय कई अन्य बाहरी शक्तियों द्वारा नियंत्रित होते हैं।

1947 में देश की स्वतंत्रता के बाद से, भारतीय उपक्रम नीति-निर्माण के केंद्र बिंदु रहे हैं और उन्होंने आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विकास को भी आकार दिया है। विशेष रूप से भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था में, इन उपक्रम संगठनों का योगदान ऐतिहासिक रूप से समाज के सभी वर्गों के विकास को संतुलित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। स्वतंत्रता के प्रारंभिक वर्षों में निजी पूँजी की कमी के कारण, सार्वजनिक क्षेत्र को आत्मनिर्भरता स्थापित करने, क्षेत्रीय संतुलन, समान रोज़गार के अवसर और देश के बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए अत्यावश्यक माना जाता था। तथापि, क्षेत्र चाहे कोई भी हो, इन उपक्रम के नेता और प्रबंधक कंपनी की कार्य संरचना को आकार देने और परिणाम प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामान्य रूप से, उपक्रम के नेताओं पर संगठनात्मक परिवर्तन के प्रबंधन, संगठनात्मक संस्कृति के विकास, नीति की रणनीति बनाने, संकट के प्रबंधन और व्यावसायिक लक्ष्यों को एक साथ प्राप्त करने जैसी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ होती हैं।

सार्वजनिक क्षेत्र में कार्यरत किसी भी नेता के लिए प्रमुख प्रदर्शन संकेतक

विभिन्न अध्ययनों से पता चलता है कि सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों में नेताओं ने पाँच विषयगत क्षेत्रों को प्रमुख जिम्मेदारी क्षेत्र (KRA) के रूप में पहचाना है -

(1) संचार कौशल - (2) सकारात्मक व्यक्तित्व - (3) नेतृत्व व्यवहार - (4) एचआर कौशल - (5) निर्णय-निर्माण

अधिकांश नेताओं का मानना है कि सार्वजनिक क्षेत्र के संगठन के नेतृत्व के लिए संगठन के प्रति दृष्टिकोण, व्यावसायिक मानसिकता और रणनीतियों की योजना बनाने व उन्हें क्रियान्वित करने की क्षमता आवश्यक है। व्यावसायिक कुशाग्रता और संगठन के लिए रणनीतिक दृष्टिकोण प्रदान करने की आवश्यकता को भी किसी भी सार्वजनिक क्षेत्र के नेता के प्रमुख कार्यक्षेत्र के रूप में रेखांकित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, संगठन और उसके वित्त की अच्छी समझ, तकनीकी कौशल और समस्या-समाधान की क्षमता इन नेताओं के लिए ध्यान के अन्य महत्वपूर्ण बिंदु थे। साहसी निर्णय लेने और गणनाबद्ध जोखिम उठाने का आत्मविश्वास, साथ ही निर्णय-निर्माण में अधीनस्थों को शामिल करना, आवश्यक निर्णय-संबंधी कौशल के रूप में आवश्यक हैं।

आवश्यक नेतृत्व गुण

- **संचार कौशल**: कर्मचारियों, सरकार और प्रशासनिक अधिकारियों के साथ प्रभावी संचार अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- **सकारात्मक व्यक्तित्व**: सत्यनिष्ठा, दृढ़ संकल्प, आशावाद और उदाहरण पेश करते हुए नेतृत्व करना - ये आवश्यक गुण हैं।
- **नेतृत्व व्यवहार**: परिवर्तन-उन्मुख (दृष्टि, रणनीति, नवाचार) और संबंध-उन्मुख (टीम-निर्माण, प्रेरणा) व्यवहार अत्यावश्यक हैं।
- **एचआर कौशल**: प्रतिभा अधिग्रहण, प्रशिक्षण और प्रदर्शन प्रबंधन प्रमुख जिम्मेदारियाँ हैं।
- **निर्णय-निर्माण कौशल**: नेताओं को तार्किक, त्वरित और जोखिम-गणित निर्णय लेने होते हैं, साथ ही निचले प्रबंधन को भी सशक्त बनाना होता है।

संगठनात्मक संस्कृति के संबंध में, सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों में

यह देखा गया है कि कम पदानुक्रम वाले उचित संगठनात्मक ढाँचे और शक्ति के प्रत्यायोजन के माध्यम से निर्णय–निर्माण में अधिक स्वतंत्रता को कई इएळ में प्राथमिकता दी गई है। हालाँकि, भारतीय इएळ अत्यधिक केंद्रीकृत हैं और अभी भी एक बड़ी शक्ति-असमानता विद्यमान है। निचले और मध्यम प्रबंधन को निर्णय-निर्माण में शायद ही शामिल किया जाता है और विभिन्न विभागों व एजेंसियों के बीच समन्वय की भी समस्याएँ हैं। इस तरह के माहौल में, चर्चा और फीडबैक तंत्र के माध्यम से समस्या-समाधान नेताओं के लिए आवश्यक उपकरण हैं। इसके अलावा, कर्मचारियों को प्रेरित करना और उन्हें संलग्न रखना शीर्ष प्रबंधन की प्राथमिकता होनी चाहिए। सभी स्तरों पर प्रशिक्षण, सॉफ्टवेयर और तकनीकी कौशल पर ध्यान और कौशल का निरंतर उन्नयन होना चाहिए। उचित योग्यता वाले कर्मियों की भर्ती, नियोजित हायरिंग और संगठन में सही व्यक्ति को सही पद पर रखना भी इन नेताओं के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों के रूप में उजागर किया गया है।

सुशासन

'शासन' की अवधारणा नई नहीं है। यह उतनी ही पुरानी है जितनी मानव सभ्यता। सरल शब्दों में, 'शासन' का अर्थ है:

निर्णय लेने की प्रक्रिया और जिस प्रक्रिया द्वारा निर्णयों को लागू (या नहीं) किया जाता है।

चूँकि शासन निर्णय-निर्माण और निर्णयों के कार्यान्वयन की प्रक्रिया है, इसलिए शासन का विश्लेषण औपचारिक और अनौपचारिक अभिनेताओं (जैसे सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों में नेता और प्रबंधक) पर केंद्रित होता है जो निर्णय-निर्माण और कार्यान्वयन में शामिल हैं। जो व्यवस्थाएँ स्थापित की गई हैं, उन्हें संगठन के प्रत्येक स्तर पर नेताओं द्वारा प्राथमिकता दी जानी चाहिए और तदनुसार निर्णयों को लागू किया जाना चाहिए।

जवाबदेही और पारदर्शिता सुशासन के अनिवार्य स्तंभ हैं जो सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों और उनके हितधारकों को परिणामों पर ध्यान केंद्रित करने, स्पष्ट उद्देश्य निर्धारित करने, प्रभावी रणनीतियाँ विकसित करने और कंपनी के प्रदर्शन की निगरानी व रिपोर्टिंग करने के लिए बाध्य करते हैं। वित्तीय जवाबदेही की कमी से अकुशलता, अपव्यय और कौशल की चोरी हो सकती है और यहाँ तक कि संगठन की वृद्धि व प्रगति भी बाधित हो सकती है। 'सुशासन' दृष्टिकोण के माध्यम से पारदर्शिता को बढ़ावा देने की रणनीतियों को अंतिम रूप देने से पहले संगठनात्मक नेताओं द्वारा सुशासन को बढ़ावा देने में प्रमुख हितधारकों के तुलनात्मक लाभ की समीक्षा करना उपयोगी होगा।

पारदर्शिता एवं सुशासन - रणनीतिक केंद्र-बिंदु

पारदर्शिता एवं सुशासन के लिए नेताओं द्वारा रणनीतिक केंद्र-बिंदु		
क्र.सं.	**रणनीति**	**विशिष्ट पहल**
1	**रणनीति 1: सूचना तक पहुँच**	**सूचना कानूनों तक पहुँच:** • सूचना का अधिकार (RTI) कानून • विशिष्ट अभिलेख प्रबंधन एवं प्रतिधारण नियम तथा अभिलेखों का डिजिटलीकरण • व्हिसल ब्लोअर संरक्षण • संगठन के सीडीए नियमों के अधीन आय एवं संपत्ति का प्रकटीकरण • समर्पित शिकायत प्रबंधन पोर्टल **सार्वजनिक डोमेन में सूचना डालना:** • निवेशक संबंध से संबंधित वित्तीय जानकारी वेबसाइट पर उपलब्ध कराना • वेब-आधारित भुगतान अनुमोदन डेटा वेबसाइट पर प्रकाशित करना
2	**रणनीति 2: नैतिकता एवं सत्यनिष्ठा**	• राजनीतिक व यूनियन प्रतिनिधियों, सिविल सेवा, न्यायपालिका, नागरिक समाज समूहों आदि के लिए आचार संहिता का विकास एवं कार्यान्वयन • कानून के तहत अधिकारियों को दिए गए विवेकाधीन अधिकारों को युक्तिसंगत बनाना ताकि सरकार में दुरुपयोग न हो • सार्वजनिक समीक्षा के लिए प्रक्रियाएँ खोलकर प्रणालियों में पारदर्शिता लाना

पारदर्शिता एवं सुशासन के लिए नेताओं द्वारा रणनीतिक केंद्र-बिंदु		
क्र.सं.	**रणनीति**	**विशिष्ट पहल**
		• खरीद एवं बजटिंग में पारदर्शिता तथा बाहरी एजेंसियों द्वारा समय पर स्वतंत्र ऑडिट • पारदर्शी एवं जवाबदेह प्रशासनिक कार्रवाई हेतु प्रशासनिक प्रक्रिया कानून
3	**रणनीति 3 : संस्थागत सुधार**	• सेवाओं की डिलीवरी के लिए कार्यकारियों के साथ सार्वजनिक सेवा समझौते - उन्हें वस्तुनिष्ठ एवं पारदर्शी रूप से जवाबदेह ठहराना • यदि संभव हो तो विभिन्न निर्णय-प्रक्रियाओं में हितधारकों की भागीदारी **निम्नलिखित माध्यमों से सार्वजनिक भागीदारी को प्रोत्साहित एवं सुगम बनाना :** • सार्वजनिक सुनवाई • सतर्कता अध्ययन मंडल • नागरिक मंच • सरकारी अनुबंध समितियाँ • स्वतंत्र भ्रष्टाचार-विरोधी एजेंसियाँ • विक्रेताओं, ग्राहकों एवं अन्य हितधारकों की क्षमता निर्माण हेतु अनियमितताओं के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए नियमित संवाद सत्र आयोजित करना
4	**रणनीति 4 : विशिष्ट मुद्दों को लक्षित करना**	• सरकारी अधिकारियों तक जनता की आसान पहुँच • वरिष्ठ अधिकारियों के संपर्क नंबर शिकायत पंजीकरण हेतु सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराना • वरिष्ठ अधिकारियों के संपर्क नंबर, ईमेल एवं अन्य विवरण प्रदान करने के लिए कंपनी की वेबसाइट पर विभागीय लिंक
5	**रणनीति 5 : मूल्यांकन एवं निगरानी**	• प्रदर्शन मापन एवं प्रबंधन • प्रमुख प्रदर्शन संकेतकों (KPI) के माध्यम से कर्मचारियों के प्रदर्शन की निगरानी • वार्षिक प्रदर्शन मूल्यांकन समीक्षा • सभी सरकारी विभागों में नागरिक चार्टर का विकास एवं कार्यान्वयन • सामग्री के लिए पूर्व-निर्धारित ढाँचे के साथ संगठन द्वारा वार्षिक रिपोर्ट का प्रकाशन

निष्कर्ष: 'सुशासन' लागू करने की प्रक्रिया संगठन के कर्मचारियों की पूर्ण प्रतिबद्धता के बिना सफल नहीं हो सकती। जबकि किसी भी मंच पर सभी व्यक्तियों के अधिकारों पर व्यापक चर्चा होती है, भ्रष्टाचार उन्मूलन के मुद्दों की बात आने पर, अंतत: उन सभी की अपने कार्यक्षेत्र में सुशासन को बढ़ावा देने और अपने जीवन को प्रभावित करने वाले निर्णयों में सक्रिय रूप से भाग लेने की जिम्मेदारी है। अपनी क्षमता में नेतृत्व की भूमिका निभाने वाले प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि पदाधिकारियों को उनके विश्वास में कार्य करने वाले लोगों की ओर से सत्यनिष्ठा के साथ कार्य करना होता है।

व्यक्तिगत कर्मचारी के स्तर पर सत्यनिष्ठा में सुधार का इसलिए एक महत्वपूर्ण योगदान है। 'सुशासन' के लिए आवश्यक है कि सभी अभिनेता शासन प्रक्रिया में संलग्न हों और सभी कानूनी रूप से निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन सुनिश्चित करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों की सुपरिभाषित आचार संहिताओं का पालन करें। ये सभी उपाय निश्चित रूप से कंपनी के शीर्ष नेताओं को निगम में 'सुशासन' लाने के दृष्टिकोण को बनाए रखने में सहायता करेंगे।

अपशिष्ट प्रबंधन : एक सामाजिक जिम्मेदारी

गरिमा ओझा
सहायक प्रबंधक (वित्त)

बढ़ते शहरीकरण व उसके प्रभाव से निरंतर बदलती जीवनशैली ने आधुनिक समाज के सम्मुख घरेलू व औद्योगिक स्तर पर उत्पन्न होने वाले अपशिष्ट के उचित प्रबंधन की गंभीर चुनौती प्रस्तुत की है। इस बढ़ती समस्या ने देश को इस विषय पर नए सिरे से सोचने पर मजबूर किया है और इस सन्दर्भ में प्रत्येक व्यक्ति की सामाजिक जिम्मेदारी पर भी प्रकाश डाला है।

इस विषय पर विस्तृत चर्चा करने से पहले हमें यह समझना होगा कि अपशिष्ट का आशय क्या है? इस शब्द का अर्थ अवांछित व अनुपयोगी सामग्री को इंगित करता है जो हमारे प्रयोग के पश्चात् अनुपयोगी है।

उदाहरणत: ठोस अपशिष्ट, जैसे घरों, कारखानों इत्यादि के बचे हुए पदार्थ। तरल अपशिष्ट, जो जलमंयंत्रो व घरों से निकलते हैं। सूखा अपशिष्ट, जैव निम्नीकरण वाले अपशिष्ट जो जीवों द्वारा पानी, मीथेन व कार्बन डाई ऑक्साइड में बदल जाते हैं व अजैव निम्नीकरण अपशिष्ट जैसे प्लास्टिक जो सालों साल वैसे ही रहते हैं ।

पीआईबी (प्रेस सूचना ब्यूरो) के अनुसार 2016 के आंकड़ों के अनुसार भारत में प्रतिदिन 62 मिलियन टन अपशिष्ट का उत्पादन होता है जिसमे 1540 मीट्रिक टन हरियाणा उपक्षेत्र, 201 मीट्रिक टन राजस्थान उपक्षेत्र, 2270 मीट्रिक टन उत्तर प्रदेश व दिल्ली प्रतिदिन अपशिष्ट निकलता है। वर्ष 2021 तक का उत्पादन लगभग 27,236 मैट्रिक टन/दिन है।

अब प्रश्न यह उठता है कि इतना अपशिष्ट जो पूर्ण भारत में प्रतिदिन उत्पादित हो रहा है उसका परिणाम क्या है ?

⟶ अपशिष्ट के कारण परिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। सबसे ज्यादा प्रभाव समुद्री परिस्थितिकी पर पड़ा है। जिससे समुद्री प्रजातियां नष्ट व उत्परिवर्तित हो रही हैं जो मनुष्यों के लिए भी कई खतरनाक बीमारियों के लिए जिम्मेदार हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार भारत में अपशिष्ट प्रबंधन में सुधार करके 22 प्रकार की बीमारियों को नियंत्रित कर सकते हैं।

⟶ अपशिष्ट पदार्थों द्वारा दूषित रसायन भूजल में मिलता है जो आम जन के लिए नुकसानदायक है।

⟶ अपशिष्टों से न केवल जल बल्कि वायु भी दूषित होती है जो हर तरीके से हमारे स्वास्थ्य व जीवन शैली पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

इसलिए अब यह हमारी व सरकार की सामाजिक जिम्मेदारी है कि इन अपशिष्टों का प्रबंधन करे क्योंकि हमारी पृथ्वी कोई कूड़ेदान नहीं है।

आज की नव पीढ़ी को ये कदम उठाना है,
हर संभव प्रयास कर पृथ्वी को बचाना है।
आ रही है मुश्किलें हो रहा है वातावरण दूषित,
परन्तु अपशिष्ट प्रबंधन से ही होगा पर्यावरण हर्षित।
इसकी जिम्मेदारी है न केवल सरकार की,
बल्कि यह तो कर्तव्य है नीति है हर नर और नारी की।।

अपशिष्ट प्रबंधन करना एक सामाजिक जिम्मेदारी है व इसकी कुछ विधियां हैं। अपशिष्ट प्रबंधन का अर्थ अनुपयोगी सामग्री को मूल्यवान संसाधन के रूप में बदलना है।

1. **लैंडफिल** ⟶ सबसे ज्यादा उपयोग में आने वाली विधि है लैंडफिल अर्थात् अपशिष्टों को एकत्रित करके उन्हें मृदा से ढक कर संदूषण से बचाकर कर प्रबंधन करना। यह विधि अपशिष्टों को 20-30% तक कम करती है परन्तु अपेक्षाकृत महंगी हैं।

2. **पायरोलिसिस** ⟶ अन्य विधि है पायरोलिसिस - इस विधि में अपशिष्टों को रासायनिक रूप से विघटित किया जाता है। यह विधि भी पर्यावरण के लिए लाभप्रद नहीं है।

3. **'कम्पोस्ट बनाओ, कम्पोस्ट अपनाओ'** ⟶ अन्य व सबसे बेहतर विधि है 'कम्पोस्ट बनाओ, कम्पोस्ट अपनाओ' जिसमें अपशिष्टों को खाद में बदला जाता है।

4. **अन्य प्रोजेक्ट** ⟶ अन्य प्रोजेक्ट जैसे रीप्लान जिसमें कचरे को कपास फाइबर में बदला जाता है, अपशिष्ट धन पोर्टल - जिसमे अपशिष्टों का पुनर्चक्रण करके ऊर्जा उत्पन्न की जाती है।

इन सभी विधियों से हम व हमारा समाज अपशिष्टों का प्रबंधन कर पाएगा। परन्तु यह हमारी सामाजिक जिम्मेदारी है कि घर गीले, सूखे, अभियांत्रिकी अपशिष्टों को अलग-अलग करे। हम स्वयं रसोई अपशिष्टों से खाद्य बनाए व बेहतर समाज बनाए।

74वें संवैधानिक संशोधन के तहत अपशिष्ट निपटान स्थानीय निकायों की जिम्मेदारी है तथा संविधान के अनुच्छेद 51A (g) जो मौलिक कर्तव्यों से संबंधित है के अनुसार, भारत के प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वो पर्यावरण की रक्षा करे व उसे स्वच्छ बनाए।

हमारी सरकार ने अपशिष्ट प्रबंधन के नियम बनाए हैं तथा यह हमारी सामाजिकता है कि हम उन्हें मानें व पूर्ण करें-

(1) ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम - 2016 - इसमें अपशिष्टों को जैव निम्नीकरणीय, गैर जैव निम्नीकरणीय व घरेलू अपशिष्टों में वर्गीकृत किया जाएगा व उनका प्रबंधन किया जाएगा।

(2) कंस्ट्रक्शन व डेमोलिशन अपशिष्ट प्रबंधन - जो भवन निर्माण व उससे संबंधित गतिविधियों पर लागू होते हैं।

(3) ई-कचरा प्रबंधन नियम जो अक्टूबर 2016 से प्रभावी है - यह प्रत्येक निर्माता, उत्पादकर्ता, उपभोक्ता विक्रेता, संग्रहकर्ता पर लागू होता है।

(4) प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम 2022 - यह नियम प्लास्टिक अपशिष्टों का प्रयोग कम व पुनर्चक्रण ज्यादा करने पर बल देता है।

(5) शून्य अपशिष्ट नीति - (लैंडफिल को 10% से भी कम करना) इस नीति के अन्तर्गत जितना भी अपशिष्ट मौजूद है उसे पुन: चक्रित करके नए संसाधन में प्रयोग करना है ताकि एक दिन सम्पूर्ण अपशिष्ट - संसाधनों व ऊर्जा में बदल जाए ताकि भारत में शून्य अपशिष्ट है।

'बेहतर कल के लिए पुनर्चक्रण चक्रण करें,
अपशिष्टों को संसाधन में बदलने की पहल करे,
आपकी भूमिका है महत्वपूर्ण समाज में,
अपशिष्टों का करें पुन: उपयोग हमारे कामकाज में।'

अपशिष्ट प्रबंधन क्षेत्र में सुधार के लिए नागरिकों की भागीदारी की महत्ता अति आवश्यक है।

⟶ देश के लोगों को अपशिष्ट निस्तारण के प्रति जागरूक व शिक्षित बनाना होगा ताकि समाज में परिवर्तन आ सके,

⟶ गीले कचरे के प्रसंस्करण, सूखे कचरे के पुनश्चक्रण के अलावा भी संग्रह व पृथक्करण केन्द्रों व सामग्री पुन: प्राप्ति सुविधाओं के उचित ढांचे की आवश्यकता है।

⟶ किसी भी अपशिष्ट को फेंकने से पहले सोचें - क्या इसका कोई और उपयोग हो सकता है? क्योंकि एक आदमी का कचरा - दूसरे का खजाना हो सकता है तो स्मार्ट बनें व कचरे को पृथ्वी को नष्ट न करने दे क्योंकि

'हमारा ग्रह, हमारा कचरा व हमारी जिम्मेदारी,
और पृथ्वी का बचाव में महत्वपूर्ण है हमारी भागीदारी ।।'

आपका हर कदम एक नया क्षितिज दिखाता है...

महान कार्य किसी अचानक आए आवेग से नहीं, बल्कि छोटी-छोटी कोशिशों के निरंतर संगम से पूरे होते हैं।

हर दिन की एक छोटी प्रगति, भविष्य की एक बड़ी सफलता का आधार बनती है।

राष्ट्रपति के मंच के लिए डीएमआर 1700 ग्रेड स्टील की आपूर्ति

मिधानि के लिए वर्ष 2026 का गणतंत्र दिवस समारोह विशेष रहा क्योंकि इसे 77वें गणतंत्र दिवस समारोह, 2026 के अवसर पर राष्ट्रपति के मंच के लिए स्वदेशी रूप से विकसित लगभग 90 टन डीएमआर 1700 ग्रेड स्टील का योगदान देने का श्रेय प्राप्त हुआ है।

यह उपलब्धि डीएमआरएल, डीआरडीओ प्रयोगशालाओं, सीपीडब्ल्यूडी और मिधानि के बीच मज़बूत सहयोग को दर्शाने के साथ-साथ उन्नत सामग्रियों के क्षेत्र में भारत की बढ़ती आत्मनिर्भरता को रेखांकित करती है। डीएमआर 1700 स्टील का सफल उपयोग स्वदेशी नवाचार के माध्यम से 'आत्मनिर्भर भारत' के प्रति मिधानि की प्रतिबद्धता की पुन: पुष्टि होती है।

सीएसआर गतिविधियों द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण पर संसदीय समिति

माननीय अध्यक्ष डॉ. पुरंदेश्वरी के नेतृत्व में महिला सशक्तिकरण पर संसदीय समिति ने 'सीएसआर गतिविधियों द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण' पर बेंगलुरु में मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि) के अधिकारियों के साथ चर्चा की और मिधानि द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण के किए जा रहे कार्यों का निरीक्षण व समीक्षा की। अवसर पर मिधानि की ओर से डॉ. एसवीएस नारायण मूर्ति, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्रीमती के. मधुबाला, निदेशक (वित्त), श्री हरिकृष्ण वी., अपर महाप्रबंधक (प्रभारी, मा.संसा.) तथा श्रीमती ए आर रश्मि, वरिष्ठ प्रबंधक (मा.संसा.) ने संसदीय समिति की बैठक में भाग लिया।

सामाजिक न्याय और अधिकारिता पर संसदीय स्थायी समिति

कर्नाटक से माननीय संसद सदस्य (लोकसभा) श्री पी. सी. मोहन के नेतृत्व में, सामाजिक न्याय और अधिकारिता पर संसदीय स्थायी समिति ने सामाजिक सशक्तिकरण के क्षेत्र में मिधानि द्वारा किए जा रहे कार्यों की चर्चा और समीक्षा की। अवसर पर मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एसवीएस नारायण मूर्ति ने, निदेशक (वित्त) श्रीमती के. मधुबाला, श्री हरि कृष्ण वी., अपर महाप्रबंधक (प्रभारी, मा.संसा.) और श्रीमती ए. आर. रश्मि, वरिष्ठ प्रबंधक (मा.संसा.) के साथ मिलकर समिति को कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के तहत मिधानि द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। चर्चा का मुख्य केंद्र इन पहलों का समाज के वंचित वर्गों पर पड़ने वाला सामाजिक-आर्थिक प्रभाव भी रहा, जिसमें आरक्षण नीति का कार्यान्वयन भी शामिल था।

वन्दे मातरम्

-बंकिमचंद्र चटर्जी

सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम,
शस्यश्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम् ।।1।।

शुभ्रज्योत्स्रा पुलकितयामिनीम,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम्। वन्दे मातरम् ।।2।।

कोटि–कोटि कण्ठ कल–कल निनाद कराले,
कोटि–कोटि भुजैधृत खरकरवाले,
के बॉले माँ तुमि अबले,
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणीं मातरम्। वन्दे मातरम् ।।3।।

तुमि विद्या तुमि धर्म,
तुमि हृदि तुमि मर्म,

त्वम् हि प्राणा: शरीरे,
बाहुते तुमि माँ शक्ति,
हृदये तुमि माँ भक्ति,
तोमारेई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे। वन्दे मातरम् ।।4।।

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी, वाणी विद्यादायिनी,
नमामि त्वाम्, नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्। वन्दे मातरम् ।।5।।

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम्। वन्दे मातरम् ।।6।।